RAJBIL26868/2016/1284525

वर्ष 2 अंक 1 मूल्य 20

सामाजिक अभिरूचि का पर्याय

जयवर्द्धन

राजसमंद के प्रबुद्ध पाठक वर्ग की लोकप्रिय मासिक पत्रिका

liverajsamand.com

हिन्दी मासिक पत्रिका सितम्बर 2018

पेज संख्या : 36 राजसमंद

सांसद हरिओमसिंह राठौड़

Jaivardhan Exclusive Interview

भाजपा गुटबाजी सिर्फ अखबार का मसाला @ 4

इतिहास और आधुनिकता को संजोए 'राज्यावास' @ 9

प्रकाशन तिथि : माह की 1 से 15 तारीख

कार्यालय ग्राम पंचायत राज्यावास
पंचायत समिति व जिला-राजसमंद

बाबूलाल खारोल
सरपंच-राज्यावास

लक्ष्मणसिंह
ग्राम विकास अधिकारी

ग्राम पंचायत को ओडीएफ बनाए रखने में सहयोग प्रदान करें।

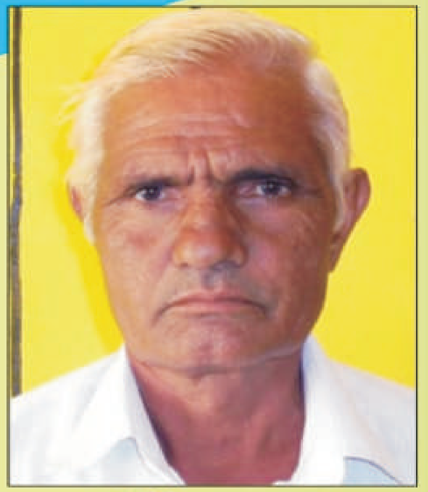

मांगीलाल जाट
उपसरपंच

वार्डपंच :- मांगीलाल लौहार, गोपीलाल सालवी, बदामीबाई भील, ललिता जाट, रमेशचन्द्र तेली, कमलादेवी लौहार, रेणु धोबी, मांगीलाल सालवी, दुर्गा सनाढ्य, शंकर बंजारा, जीवन कुंवर, मांगीलाल भील एवं समस्त ग्रामवासी
गुंजन खत्री-कनिष्ठ लिपिक, मीरा पूर्बिया-रोजगार सहायक, पंचायत सहायक-योगेश त्रिवेदी, वेणीराम भील, प्रवीण धोबी, लीला आचार्य, बाबूलाल गुर्जर-सुरक्षा गार्ड

:: ग्राम पंचायत विकास के पथ पर अग्रसर ::

◆ पंचायत द्वारा मानसून सत्र में 5100 पौधे लगाने का लक्ष्य। ◆ ग्राम पंचायत द्वारा पंचायत को नशा मुक्त करने के लिए शराबबंदी की मुहिम चला रखी हैं। सत्यापन व दिनांक के अभाव में यह कार्य बंद हैं। ◆ पंचायत द्वारा लगाए गए शिविर में 104 यूनिट रक्तदान हुआ। ◆ सर्व सुविधा युक्त शमशान का निर्माण। ◆ पंचायत द्वारा 1 किलोमीटर तक बरसाती नाले का निर्माण किया गया। ◆ गांव में ऐतिहासिक बावड़ी हैं जिसमें गांव बसने के दौरा बनाई गई। चट्टानों को काट कर 30 सीढ़ियां बनाई गई।

-: ग्रामीणों से अपील :-

◆ ग्राम पंचायत के समस्त निवासियों से अपील की जाती हैं कि अपने-अपने घरों में जलबद्ध शौचालयों का निर्माण करवाएं और उसका नियमित उपयोग करें। ◆ ग्राम पंचायत को खुले से शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाए रखने एवं ग्राम पंचायत को साफ-सुथरा व निर्मल बनाने में सहयोग प्रदान करें। ◆ प्रधानमंत्री आवास योजना का लाभ लेने हेतु अधिक जानकारी ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त करें।
◆ प्रधानमंत्री उज्ज्वला स्कीम योजना के तहत बीपीएल परिवार निःशुल्क रसोई गैस कनेक्शन की सुविधा प्राप्त करें। ◆ मनरेगा श्रमिकों एवं अन्य मजदूरों के लैबर कार्ड ज्यादा से ज्यादा बनवाने में सहयोग करें। राज्य सरकार द्वारा इस योजना में पंजीकृत परिवार को बीपीएल परिवारों से भी अधिक लाभ दिया जाएगा। ◆ पर्यावरण संरक्षण के लिए ज्यादा से ज्यादा पौधे लगाएं। ◆ अपना काम अपना खेत योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं। ◆ कचरे को कचरा पेटी में ही डालें। ◆ कागज, प्लास्टिक की बोतलें, धातु के डिब्बे, कांच आदि अलग-अलग फेंके। ◆ सार्वजनिक स्थानों पर कचरा न फेंके। ◆ सार्वजनिक स्थलों पर थूकें नहीं। ◆ अपने पालतू जानवरों को सार्वजनिक स्थल पर गन्दगी न फैलाने दें। ◆ निर्माण स्थलों पर या आसपास कचरा जमा होने की स्थिति में तुरंत प्रशासन को सूचित करें।

सम्पादकीय

नए रूप में जयवर्द्धन

किसी भी अभियान की समीक्षा के लिए कुछ पड़ाव निर्धारित होते हैं। जब हमनें जयवर्द्धन का यह सफर प्रारंभ किया, तो इसकी निरंतरता को लेकर उसकी गुणवत्ता को लेकर अनेक संदेश एव कहीं न कहीं आत्मविश्वास की कमी थी, परंतु गत अंत के साथ जयवर्द्धन ने 1 साल पूर्ण कर लिया। इसको हम हमारी इस यात्रा का पहला पड़ाव मानते हैं। इस 1 वर्ष में यह पुस्तक कहां तक पहुंची और किस रूप में पहुंची, वह एक अलग चर्चा का विषय हो सकता है, परंतु उसको 1 वर्ष तक निरंतर रूप से सभी तक पहुंचाने का जो कार्य हम सफलतापूर्वक कर पाए, वह अपने आप में हर्ष के साथ आगे बेहतर बनने की प्रेरणा भी देता है। इसी के साथ हमारे प्रयास रहते हैं, इस पुस्तक को इस तरह से प्रस्तुत किया जाए कि हर व्यक्ति से जुड़ सकें। उसी सोच को लेकर हमने इसमें नए नए प्रयोग करने का क्रम जारी रखा। इस श्रृंखला में सितंबर अंक से साक्षात्कार कॉलम जोड़ा है। इस बार राजसमंद सांसद श्री हरिओमसिंह से रूबरू होने का अवसर मिला। आगे भी प्रयास रहेगा कि शहर के चर्चित लोगों से रूबरू हो सकें।

एक नए कॉलम के अंतर्गत गांव की जानकारी आपके समक्ष लेकर आए, ताकि हम अति शहरीकरण के दौर में अपने गांवो को खुद से जोड़ सकें। साथ ही कुछ सकारात्मक चीजों को लेकर भी एक नए कॉलम को जोड़ा गया है, जिसके अंदर जिसके तहत हमारे आस पास होने वाली सकरात्मक घटनाओं को प्रस्तुत किया है। उम्मीद है आपको यह नए जुड़ाव पसंद आएंगे और इस पर आपके सुझाव हमें मिलेंगे। क्योंकि आपके सुझाव और आपकी समीक्षा ही हमें बेहतर बनने के लिए प्रेरित करती हैं। एक वर्ष तक जयवर्द्धन को प्यार देने के लिए अनंत आभार।

सामाजिक अभिरुचि का पर्याय

जयवर्द्धन

website : liverajsamand.com

सम्पादक व प्रकाशक	ललिता राठौड़
निदेशक व उप सम्पादक	विजय शर्मा
सम्पादन सहयोगी	हेमेन्द्रसिंह, सूर्यप्रकाश दीक्षित
विज्ञापन प्रबंधक	जितेंद्र शर्मा
संवाददाता	नरपतसिंह राठौड़
ग्राफिक डिजाइन	महेंद्रसिंह मोजावत
फोटोग्राफी	भरत पालीवाल (श्रीराम स्टूडियो)

कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798

Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

संपादक, प्रकाशक एवं स्वामी ललिता राठौड़ द्वारा राजसमंद से प्रकाशित एवं रमेशचंद्र आचार्य द्वारा आचार्य प्रिंटर्स हस्तिनापुर, कांकरोली, जिला राजसमंद राजस्थान से मुद्रित।

नोट : पुस्तक में प्रकाशित हर सामग्री में यथासंभव सावधानी रखी। फिर भी त्रुटियों के ध्यानाकर्षण के लिए धन्यवाद्। किसी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र राजसमंद होगा।

इस अंक में खास...

1. **कवर स्टोरी :** भाजपा गुटबाजी सिर्फ अखबार का मसाला : राठौड़ — पेज 4
2. **ग्राम यात्रा :** इतिहास और आधुनिकता को संजोए राज्यावास — पेज – 8
3. **शिक्षक दिवस विशेष... :** क्या है शिक्षक की सार्थकता? — पेज –12
4. **माटी का लाल :** हिन्दी साहित्य संवर्द्धक भगवतीप्रसाद देवपुरा — पेज– 14
5. **तीखी मिर्ची :** सत्ता का जयकारा — पेज – 12
6. **राजसमंद की खबरें :** स्वतंत्रता दिवस पर 46 प्रतिभाएं सम्मानित — पेज – 17
7. **लघु कहानी :** कथा पच्चीस — पेज – 20
8. **आस्था :** जय बाबा री — पेज – 21
9. **मेवाड़ी चौपाल :** चम्पो चापलूस — पेज – 26
10. **यात्रा वृतांत :** कवर्धा (छत्तीसगढ़) — पेज – 28
11. **कविताएं :** कांकरोली की झांकी, जब बचपन को चोट लगी — पेज – 30
12. **भक्ति या भीख :** भगवान ऊं मंगतो कांई कांई मांगे — पेज– 31
13. **राजसमंद में महाराणा राजसिंह पेनोरमा** — पेज– 36

जयवर्द्धन की वार्षिक सदस्यता सिर्फ 150 रुपए में

हमारे क्षेत्रीय प्रतिनिधी जहां से आप जयवर्द्धन मासिक पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं एवं वार्षिक बुकिंग कर सकते हैं।

भीम - हीरालाल भाट मो 99296396015
देवगढ़ - कमल शेख, 94147-86464
रेलमगरा - रोशनलाल टुकलिया मो. 9414927728
आमेट - मॉडर्न स्टेशनर्स, लक्ष्मी बाजार, आमेट
कुंभलगढ़ - देवीसिंह मो. 8003124089
गोमती चौराहा, चारभुजा- भीमराज कोठारी मो. 9610973283
बिनोल - हितेश दवे मो. 7023480406
कुंवारिया - विनय दाधीच मो. 7665005378
नाथद्वारा - कीर्ति स्टेशनर्स, नई सड़क
गजपूर - प्रभूदास वैष्णव मो. 7568485624
मोही - बाबूलाल कीर, मो. 98292-41423

भाजपा गुटबाजी सिर्फ अखबार का मसाला : राठौड़

हर बार कुछ रोचकता एवं नवीनता जयवर्द्धन का प्रयास रहा है। इसी के तहत इस बार राजसमंद सांसद हरिओमसिंह राठौड़ का साक्षात्कार किया, जिसमें उनके निजी, सामाजिक, सरकार और राजनैतिक गुटबाजी व उससे जुड़ी कई अफवाहों से पर्दा उठाया। वहीं परिवार और राजनीति के धर्म संकट पर भी खुलकर बताया। इस साक्षात्कार पर सम्पादन सहयोगी हेमेन्द्रसिंह चौहान एवं उप सम्पादक विजय शर्मा की खास रिपोर्ट

जयर्द्धन साक्षात्कार में खुले कई राज

सवाल : गौरव यात्रा का आगाज आपके संसदीय क्षेत्र से हुआ। क्या आपको लगता है, आप एक बेहतर आशीर्वाद देने में सफल रहे हैं ?

जवाब : प्रभु चारभुजानाथ के श्री चरणों से जिस गौरवयात्रा का आगाज किया। निश्चित तौर पर राजसमंद एक ऐतिहासिक शुरूआत देने में सफल रहा है । इसके लिए मैं पार्टी से जुड़े प्रत्येक कार्यकर्ता को धन्यवाद देता हूं कि उनकी अथक मेहनत से ही हम इस अभियान को इतनी बेहतरीन शुरुआत देने में सफल हो सके।

सवाल : जिस उद्देश्य को लेकर यात्रा की शुरुआत की गई आपको क्या लगता है, उद्देश्यों में कितना सफल हो पायेगी ?

जवाब : लोकतंत्र में प्रत्येक सरकार का दायित्व होता है कि वह जनता के हित में काम करें एवं चुनावी समर से पहले अपने उन कामों को लेकर जनता के बीच जाए। हर सरकार अपनी एक जवाबदेही तय करें एवं अपने उन किए गए कामों को जनता तक पहुंचाने के आधार पर पुन: समर्थन की मांग करें। निश्चित तौर पर राजस्थान सरकार में इन 5 सालों में राजस्थान के विकास के लिए अनेक कार्य किए हैं एवं मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार से इस गौरव यात्रा को जनसमर्थन प्राप्त हो रहा है। राजस्थान एक बार पुन: भाजपा सरकार में विश्वास जताएगा।

सवाल : आजकल जनता तक पहुंचने के लिए गौरव यात्रा की तरह देश के सम्पूर्ण राजनीतिक परिदृश्य में इन यात्राओं का प्रचलन बढ़ रहा है, तो इनको इन राजनीतिक यात्राओं की इस परंपरा को आप किस प्रकार से देखते हैं ?

उत्तर : मेरे ख्याल से ये यात्राएं सरकारों की एक जवाबदेही तय करती है। अगर गौरव यात्रा का उदाहरण लेते हुए कहूं तो वसुंधरा जी ने इन 5 सालों में अनेक कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से राजस्थान को अग्रणी बनाने के प्रयास किए। अब एक अवसर है कि वह अपने इन कार्यों का लेखा जोखा गौरव यात्रा के माध्यम से लेकर जनता के बीच जाएं और जनता उनका मूल्यांकन करें। मेरे ख्याल से यह यात्रा एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिए बड़ी आवश्यकता है, जहां जनता के प्रति जवाबदेही होने की एक परंपरा निश्चित की जाती है।

सवाल : आपने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत छात्र राजनीति से की। उसके बाद आप जिला परिषद सदस्य से होते हुए राजसमंद के प्रथम जिला प्रमुख पद तक पहुंचे। आपने राजसमंद भाजपा जिलाध्यक्ष के पद पर भी अपने दायित्वों का निर्वहन किया एवं आज राजसमंद लोकसभा क्षेत्र से आप सांसद है, तो स्वयं अपनी संपूर्ण राजनीतिक यात्रा को किस प्रकार आंकते हैं ?

जवाब : छात्र राजनीति से अपने सामाजिक जीवन का प्रारंभ करने से लेकर लगभग 41 वर्ष इन सामाजिक कार्यों से जुड़ा रहने के

पश्चात अपने कार्यों का आंकलन करता हूं तो कहीं ना कहीं खुद को संतुष्ट पाता हूं। छात्रसंघ अध्यक्ष रहते हुए मैंने छात्रों की बेहतरी के लिए कार्य करने का प्रयास किया। मेरा हमेशा से उद्देश्य रहा कि मूलभुत आवश्यकताओं पर कार्य किया जाए तो मैंने कैंटीन के समोसों की साइज बढ़ाने से ज्यादा कॉलेज में पढ़ने के लिए विद्यार्थियों की सीटें बढ़ाने के लिए संघर्ष किया।

तत्पश्चात जिला प्रमुख के रूप में ग्रामीण परिवेश में काम करने का अवसर मिला, वहां पर भी मैंने सहभागिता बढ़ाने पर जोर दिया। क्योंकि भारत को गांव का देश कहा जाता है, तो इसके विकास की एक मजबूत नींव भी गांवों में ही डालनी होगी। मैं जिले का पहला जिला प्रमुख था, तो इस नाते मेरे पास पूर्व में किसी के द्वारा किए गए कार्यों का कोई उदाहरण नहीं था। साथ ही मुझ पर एक अतिरिक्त दायित्व था कि मैं इस पद पर आगे आने वाले मेरे साथियों के लिए कुछ श्रेष्ठ उदाहरण स्थापित कर सकूं। तत्पश्चात सांसद के रूप में जब राजसमंद ने मुझको चुना तो मेरी जिम्मेदारी और भी विस्तृत हो गई। क्योंकि एक सांसद के रूप में हमको ना केवल अपने स्थानीय मुद्दों को देश के समक्ष ले जाना होता है, अपितु राष्ट्रीय स्थितियों पर भी अनेक परिचर्चाओं में भाग लेना पड़ता है।

एक सांसद के रूप में मेरा प्रयास रहा कि मैं अपने क्षेत्र की समस्याओं को संसद के पटल पर रख सकूं। उनके समाधान ला सकूं एवं अपनी सरकार की उपलब्धियों को पुन: अपने क्षेत्र के आमजन तक पहुंचा सकूं। जैसे कि जब जीएसटी को लागू किया गया, तो मैंने अपने क्षेत्र के 8 विधानसभा में लोगों से मिलकर उस पर चर्चा की, ताकि सरकार जो जीएसटी के सरलीकरण के प्रयास कर रही थी। उसमें अपने क्षेत्र के विचारों को मजबूती से प्रस्तुत कर सकूं। इस प्रकार हर एक भूमिका में मेरा यह प्रयास रहा कि मैं अपने दायित्वों का निर्वाहन श्रेष्ठतम तरीके से कर सकूं।

सवाल : राजसमंद में ब्रॉडगेज हमेशा से ही यहां के जनमानस की सोच में एक बड़ा विषय रहा है, जिस पर आपके प्रयासों से थोड़ी आस भी जगी थी, तो क्या राजसमन्द के इस सपने के धरातल पर आने की उम्मीद की जा सकती है ?

जवाब : वर्ष 2017 के बजट में ब्रॉडगेज के विषय को प्रस्तुत करते हुए इसको साकार करने के लिए इस बजट में घोषणा की गई थी। अब कामलीघाट से आगे इस के मार्ग में काफी परिवर्तन किए जा रहे हैं। यदि पूर्व के मार्ग के समकक्ष एक नया मार्ग तैयार किया जाता तो उसमें इतनी समस्याएं नहीं आती है, मगर यदि मार्ग का नवीनीकरण किया जा रहा है, तो उसमें पर्यावरण विभाग से अनुमति लेनी पड़ती है, जिसको लेकर कुछ तकनीकी समस्याएं आ रही है, जिनके निस्तारण पर कार्य जारी है। बजट में इसको समाहित करने से इस विषय पर आगे बढ़ने की सरकार की नीयत व् नीति स्पष्ट है।

सवाल : आपको जमीन से जुड़ा हुआ नेता माना जाता है, जिनके बारे में कहा जाता है कि वह अत्यंत मिलनसार एवं सहज उपलब्ध व्यक्तित्व है । आपको नहीं लगता है कि यह तत्व अब राजनेताओं से धीरे धीरे विलुप्त हो रहा है ?

जवाब : जैसा कि आपने खुद ने स्वीकार किया कि मुझमें यह तत्व उपलब्ध है कि मैं एक सामान्य व्यक्ति की तरह रहते हुए सदैव सहज उपलब्ध रहने का प्रयास करता हूं, तो इससे यह तो स्पष्ट हो जाता है कि राजनीति से यह तत्व विलुप्त नहीं हो रहा है। हां यह अवश्य मानूंगा कि इस प्रकार के आचरण को सभी राजनेताओं को अपनाते हुए प्राथमिकता से देश की जनता के लिए सहज उपलब्ध होने की प्रवृत्ति को विकसित करना पड़ेगा, तभी हम वास्तविक रूप से राजनीति के मायने एवं जन जुड़ाव को लेकर हमारे सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति करते हुए हमारे जन जन को खुद से जोड़ पाएंगे ।

सवाल : गत वर्ष आपके नेतृत्व में राजसमंद वंदे मातरम जैसे एक ऐतिहासिक आयोजन का साक्षी बना था। आपको नहीं लगता है कि जिस प्रकार से देश में जेएनयू जैसी घटनाएं सामने आती है, उन्हें देखते हुए देश के बच्चों को राष्ट्र से जोड़ने के लिए इस प्रकार के कार्यक्रमों की सतत आवश्यकता है ?

जवाब : निश्चित रूप से आपकी बातों से मैं सहमत हूं। इसीलिए हमने वंदे मातरम् आयोजन की योजना को साकार किया था। क्योंकि मेरा मानना है कि देश हम सबकी जिम्मेदारी है। कोई भी व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में काम कर रहा है, उनको अपने अन्य कार्यों के साथ साथ देश के प्रति अपने दायित्वों को जिम्मेदारी से निभाते हुए राष्ट्र निर्माण की आवश्यकता है। जब हम इन उद्देश्यों को लेकर चलते है तो कहीं न कहीं ये भावना राष्ट्र की आने वाली पीढ़ियों तक संचारित करने की जिम्मेदारी भी हमारी ही होती है। इसी सोच के साथ वन्दे मातरम आयोजन किया गया था। आज भी जब उस दृश्य को याद करता हूं, तो हजारो विद्यार्थी एक साथ वन्दे मातरम् गान करते हैं, तो एकता व राष्ट्रीयता का अद्‌भुत भाव जागृत होता है ।

सवाल : थोड़ा अलग तरह का सवाल पूछना चाहूंगा कि राजसमंद के राजनीतिक परिदृश्य में **राजसमंद विधानसभा** एक ऐसे राजनीतिक वातावरण का निर्माण करता है, जहां गत 2 बार से कांग्रेस की ओर से आपके **पारिवारिक सदस्य हरिसिंह जी चुनाव** लड़ते हैं एवं आप सदा से भाजपा से जुड़े रहे हैं। इन हालातों में पार्टी और परिवार के मध्य तालमेल बिठाने में कितनी समस्या होती है ? क्या एक धर्मसंकट वाली स्थिति पैदा नहीं हो जाती है ?

जवाब : इस शब्द धर्मसंकट से मैं सहमत नहीं हो पाता हूं। क्योंकि मेरा मानना है, जहां पर धर्म होता है, वहां संकट नहीं आ सकता है और जहां संकट है, फिर वहां धर्म नहीं हो सकता है। जहां तक बात पार्टी एवं परिवार में तालमेल बिठाने की है तो इस मामले में मैं अपने सारे परिवार का आभार प्रकट करता हूं कि उन्होंने कभी भी मुझसे ऐसी कोई अपेक्षा ही नहीं रखी, जहां में अपनी पार्टी की नीति से हट कर उनकी कोई राजनीतिक सहायता करूं। **वैचारिक आधार पर दोनों भाई** अलग अलग दलों से जुड़े हुए हैं तो कभी भी चुनाव के समय मेरे पास ऐसा कोई संदेश नहीं आता है, जहां वह मुझसे अपने किसी भी हित के लिए उम्मीद कर रहे हो एवं न हीं ऐसी कोई अपेक्षा मैं अपने चुनाव के समय उनसे रखता हूं। मुझे इस संबंध में एक किस्सा याद आता है कि एक बार पौधरोपण के किसी आयोजन में **हम दोनों भाई एक ही मंच** पर थे, तो किसी ने कहा कि **आज भाजपा और कांग्रेस दोनों साथ आ गई**, तब मेरे भाई साहब हरिसिंह जी ने एक बड़ा ही खूबसूरत जवाब दिया कि हम दोनों दिखते तो एक हैं, मगर वैचारिक रूप से एक दूसरे से बिल्कुल अलग है, परन्तु समाज को खतरा उन लोगों से है, जो दिखते तो अलग अलग हैं, मगर पर्दे के पीछे एक है।

सवाल : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश के डिजिटलीकरण पर बड़ा ही जोर रहा है, परंतु राजसमंद में इस डिजिटलीकरण के कुछ अन्य रूप सामने आते हैं, जिनमें यदाकदा हम सोशल मीडिया पर राजसमंद भाजपा की गुटबाजी की खबर सुनते रहते हैं। आप उनको किस प्रकार से देखते हैं ?

जवाब: मैं जितने भी अखबार, चैनल की खबरों में इस प्रकार की गुटबाजी की खबरों को देखता हूं, तो मुझे सिर्फ इतना ही महसूस होता है कि यह उन अखबारों द्वारा फैलाया गया एक मसाला मात्र है।

एक साथ रहने वाले पिता– पुत्र में भी कई बार मतभेद हो जाते हैं, परंतु धरातल का यह सत्य है कि हम चाहे कितने भी अलग अलग विचारों के लोग इस दल में जुड़े हुए हो, मगर सबका अंतिम लक्ष्य राष्ट्र निर्माण है। यह सारी भाजपा एक परिवार है। हो सकता है कई बार विचार अलग अलग हो, मगर उससे हमारे लक्ष्य प्रभावित नहीं होते हैं। अगर हम लोगों के मध्य कोई गम्भीर वैचारिक मतभेद होते है, तो हमें सफलता नहीं मिलती, जबकि देखा जाए, हमने सामूहिक रूप से बेहतर परिणाम प्राप्त किए, जिनमें नगरपरिषद चुनाव, विधानसभा,

सादगी... कुंवारिया में एक कार्यक्रम में यूं स्कुटर पर तय किया सफर।

लोकसभा व पंचायतीराज चुनाव तक से लेकर गौरव यात्रा तक हम सभी ने साथ साथ काम किया है और सभी में हमको बेहतर परिणाम मिले हैं, तो मैं इन सारी खबरों को महज अखबार द्वारा **नमकीन खबरें** पेश करने के रूप में देखता हूं।

सवाल : फिर भी मैं सोशल मीडिया के परिदृश्य से एक वाक्य को उठाता हूं, जिसमें लिखा होता है कि नमो नमो हरिओम नमो। हम सिर्फ यह जानना चाहते है कि इस वाक्य के गर्त में भविष्य की असीम संभावनाएं छुपी है एवं साथ ही हमें विश्वास है कि हमारे सांसद महोदय हर बड़ी से बड़ी जिम्मेदारी को निभाने में सक्षम है तो आप अपने राजनीतिक भविष्य को एक सांसद से आगे इससे भी बड़ी और नवीन जिम्मेदारियों को निभाने के रूप में किस प्रकार देखते हैं ?

जवाब : जहां तक आगामी जिम्मेदारियों की बात है तो मैं राजनीति में बिना किसी महत्वाकांक्षा के आया था। अभी भी मुझे कोई विशेष महत्वाकांक्षा नहीं है, तो आगे भी पार्टी जो भी दायित्व देगी, उनको ईमानदारी व जिम्मेदारी से निभाने का प्रयास करुंगा। साथ ही जिस भी बन्धु ने नमो नमो हरिओम नमो लिखा है, तो मेरा विश्वास है कि यहां हरिओम कोई व्यक्ति नहीं, अपितु परमेश्वर का स्मरण है।

सवाल : राजनीति इतर मैं चाहता हूं कि राजसमंद के युवा यह जाने की उनके सांसद साहब व्यक्तिगत रूप से किन अतिरिक्त गतिविधियों में रुचि लेते हैं ?

जवाब : मैं एक अच्छा श्रोता हूं। मुझे संगीत सुनने का काफी शौक है। विशेष तौर से ग़ज़ल या वह गाने जिनमें शब्दावली अच्छी हो। जैसे आप देखते होंगे, कई बार हमारे धर्मगुरु जी आजकल फिल्मी गानों के सहारे भगवान की स्तुति करते हुए देखते हैं। क्योंकि वह बोल इतने अच्छे होते हैं कि फिल्मी होने के बावजूद भी भगवान की भक्ति जैसे प्रतीत होते है। गायन तो नहीं हो पाता है, मगर मुझे बांसुरी वादन का शौक है और मैं बांसुरी वादन करता हूं।

छात्र जीवन में भी सांस्कृतिक आयोजनों से जुड़ा रहता था। अगर खेलों की बात करें, तो फुटबॉल मेरा सबसे प्रिय खेल रहा है, जिसमें युनिवर्सिटी स्तर तक खेल चुका हूं। इसके साथ साथ स्काउट और एनसीसी दोनों से जुड़ा रहा हूं। इसके अलावा मुझे पुस्तकें पढ़ने का बहुत शौक है। व्यक्तिगत रूप से **कल्याण** मेरी पसंदीदा पुस्तक है और हमेशा मेरे साथ इसकी एक प्रति रहती है।

सवाल : जैसा कि आपने बताया कि आपने अपनी राजनीतिक जीवन की शुरुआत छात्र राजनीति के साथ की और अभी राजस्थान में छात्रसंघ चुनाव का दौर चल रहा है, तो इन युवा छात्रों को आप एक बेहतर भविष्य को देखते हुए क्या संदेश देना चाहेंगे ?

जयवर्द्धन पत्रिका के अगस्त माह का अंक सांसद हरिओमसिंह राठौड़ को भेंट करते उप सम्पादक विजय शर्मा एवं हेमेन्द्रसिंह चौहान तथा पास में खड़े भाजपा युवा मोर्चा पूर्व जिलाध्यक्ष महेन्द्रसिंह चौहान।

जवाब : मैंने एबीवीपी के साथ जुड़कर अपने छात्र राजनीति का शुभारंभ किया था और कहीं न कहीं व्यक्तिगत रूप से मुझे लगा कि एक ऐसा संगठन है, जो भारत माता की जय पहले बोलता है व् भाजपा या एबीवीपी की जय बाद में बोलता है। इसी के साथ जो युवा छात्र राजनीति के सहारे राजनीतिक क्षेत्र में अपना भविष्य तलाश रहे हैं, उन्हें मैं बताना चाहूंगा कि स्वच्छ व कल्याणकारी राजनीति कि प्रवृत्ति अभी से ही डालनी चाहिए। अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को परे रखते हुए राजनीति को भी एक शिक्षा की तरह लेने के साथ ही राजनीतिक रूप से इस प्रकार स्वयं को स्थापित करें कि हम यहां विपक्ष तो पैदा करें, शत्रु ना पैदा हो। चुनाव लड़ने या चुनाव जीतने से ही काम समाप्त नहीं होता है। असल काम तो चुनावों के बाद प्रारंभ होता है, जहां पर उन्हें छात्र हितों के लिए संघर्ष, छात्रों को जागृत एवं कहीं ना कहीं राष्ट्र के निर्माण की अलख जगाने का कार्य करना होगा।

सवाल : क्या राजनीति में रहते हुए कुछ अलग प्रयोग किए जा सकते हैं, जिनसे कि युवाओं को एक बेहतर प्रेरणा प्राप्त हो ?

जवाब : निसंदेह, इस प्रकार के कार्य सोचे जा सकते हैं। प्रत्येक विधायक, सांसद द्वारा एक गांव गोद लेने की परंपरा जो प्रारंभ हुई, वह एक राजनीतिक सोच से अलग सोच दर्शाती है। जिस गांव से इस परंपरा के माध्यम से मैं जुड़ा वहां मैंने यह प्रयास किया कि इन पंचायतों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर कैसे बनाया जाए। कुछ ऐसा कैसे किया जाए कि सरकारों पर इनकी निर्भरता थोड़ी कम हो। इसी के साथ पिपलांत्री जैसा एक श्रेष्ठ कमजोर मॉडल राजसमंद ने पूरे देश के समक्ष प्रस्तुत किया है, तो हमारा प्रयास है कि इस मॉडल को अन्य गांवों तक पहुंचाया जाए। साथ ही हम लोगों का एक दायित्व है कि जो स्कूल के बच्चे हैं, उनसे नियमित रूप से हम मिलते रहे। मैं जब भी ऐसा कोई अवसर पाता हूं जहां स्कूली बच्चों से मिल सकूं, तो स्कूल में बच्चों से मिलता हूं, उनसे बात करता हूं। जब मैं स्कूल में किसी शिलान्यास के लिए जाता हूं, तो मेरा प्रयास रहता है कि उस शिलान्यास के पट पर उस बच्चे का अंकित करवा सकूं, जिसने उस विद्यालय में सर्वाधिक अंक प्राप्त किए, ताकि न केवल एक स्वस्थ संदेश जाए, अपितु ये परम्परा अन्य बच्चों के लिए एक प्रेरणा बने एवं सारे बच्चे प्रयास करें कि हम किस तरह से और बेहतर होते हुए खुद का नाम उन पट पर अंकित होते हुए देख सकें। इस तरह छोटी छोटी चीजें हैं, जो बहुत आसानी से की जा सकती है और उनके बड़े सुखद परिणाम आते हैं।

सवाल : शिलालेखों पर अपने नाम अंकित नहीं करवाना और उनके स्थान पर स्कूल के विशिष्ट छात्रों के नाम अंकित करवाने की जिस परंपरा की आप बात कर रहे हैं, तो ऐसा नहीं होता है कि कई बार लोग नाराज हो जाए कि यह क्या है, आप सांसद महोदय और आप अपना नाम नहीं लिखवा रहे हो ?

जवाब : नाराज तो नहीं, मगर फिर भी कई बार लोग पूछते जरूर है। जैसे मैंने तासोल में यह प्रयोग किया था कि वहां पर उस विद्यालय के सबसे अच्छे अंक लाने वाले बच्चे का नाम अंकित करवाया था, तो लोगों ने पूछा था कि आप अपना नाम क्यों नहीं लिखवाते हैं। आपको लिखवाना चाहिए तो मैंने हंसते हुए ही जवाब दिया था कि मैंने आज तक इन पत्थरों पर लिखे नामों में से किसी को अमर होते हुए नहीं देखा, परन्तु हो सकता है कि यह जो मैं कोशिश कर रहा हूं, इन बच्चों के नाम अंकित करवा कर इनको प्रेरणा देने की तो हो सकता है यह परंपरा कहीं ना कहीं जाकर अमर हो जाए।

साक्षात्कार सहयोगी :
महेन्द्रसिंह चौहान, खारण्डिया, 94141-72286

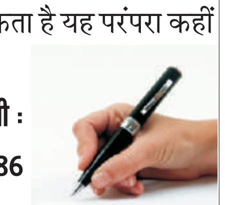

इतिहास और आधुनिकता को संजोए 'राज्यावास'

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

राज्यावास गांव का इतिहास 600 वर्ष पुराना बताया जाता है। इसका नाम राज्यावास होने के पीछे यह बताया जाता है कि उस समय राजूजी खारोल ने इस गांव की स्थापना की थी एवं उन्हीं के नाम पर इस गांव का नाम राज्यावास रखा गया था। रियासत काल में यह गांव कोठारिया ठिकाने के अंतर्गत आता था। गांव में उस रियासत काल के दौरान एक कोटड़ी का निर्माण कराया गया था, जिसमें राज परिवार के सदस्य एवं तत्कालीन रियासत के अधिकारी विश्राम किया करते थे। साथ ही तत्कालीन रावजी जवानसिंह जी द्वारा यहां एक अत्यंत खूबसूरत एवं मजबूत तालाब का निर्माण कराया गया था, जो जवानसागर के नाम से जाना जाता है।

गांव के वृद्धजन इस गांव को कुछ और ऐतिहासिक तथ्यों से जोड़ते हैं, जिसके अंतर्गत वह बताते हैं कि जब अकबर की सेना और महाराणा प्रताप की सेना के मध्य युद्ध हुआ था, तब युद्ध के दौरान प्रताप की सेना के चार योद्धा, जिनके सिर कटे हुए थे और सिर्फ धड़ लड़ते हुए यहां तक पहुंच गए। इनमें से दो हरिकुंवरजी के नाम जाने जाते हैं, जबकि एक गटालिया बावजी एवं एक मामादेव के नाम से जाने गए। वर्तमान में उक्त जगहों पर मंदिर बने हुए हैं, जो क्षेत्र के लोगों के लिए प्रमुख आस्था के केन्द्र बन गए हैं।

गांव की भौगोलिक स्थिति

राजसमंद जिला मुख्यालय से करीब 11 किमी. की दूरी पर पूर्व दिशा की ओर रेलमगरा, चित्तौड़गढ़ मार्ग पर स्थित है। इसके पूर्व की दिशा में ओड़ा, दक्षिण में सथाना, पश्चिम में भाटोली व एमड़ी तथा उत्तर दिशा में मोही गांव स्थित है।

पंचायत में राज्यावास के अलावा अमलोई, देवगांव, जोधपुरिया, तेजपुरा, फतहनगर सरीखे छोटे गांव-ढाणियां शामिल है। अकेले राज्यावास गांव की आबादी 5000 है और पूरी पंचायत की आबादी करीब 9 हजार है। ग्राम पंचायत के अंतर्गत कुल 13 वार्ड है। वर्तमान सरपंच बाबूलाल खारोल व उप सरपंच मांगीलाल है, जो वर्ष 2015 में निर्वाचित हुए।

शनि महाराज मंदिर व श्रृंगारित शनि महाराज की प्रतिमा।

गांव की प्रमुख जातियां

सनाढ्य, खारोल, ब्राह्मण (औदीच्य गोरवाल), राजपूत, गायरी, कुमावत, तेली, पूर्बिया, गुर्जर, जाट, भील, जैन, गाणीवाल तेली, सुथार, लौहार, रेगर, बागरिया, कालबेलिया, बंजारा, नाई।

गांव के ये प्रमुख आस्था स्थल

धार्मिक लिहाज से भी यह गांव खास पहचान रखता है, जहां कई प्रसिद्ध मंदिर है। गांव में गटालिया श्याम का मंदिर है, जिसके प्रति गांव के साथ दूर दूर तक के श्रद्धालुओं की आस्था जुड़ी हुई है। कहा जाता है कि जब भी कोई वस्तु खो जाए या चोरी हो जाए, तो यदि इनके नाम का दीपक जलाकर मन्नत मांगते हैं, तो शीघ्र ही चोरी ही वस्तु मिल जाती है। मंदिर में गटालिया श्याम के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं की दिनभर भीड़ लगी रहती है। इसी तरह राज्यावास से सथाना मार्ग पर शनि महाराज का प्रसिद्ध मंदिर है, जहां प्रत्येक शनिवार गांव ही नहीं, बल्कि राजसमंद शहर के साथ दूर दराज से भी श्रद्धालु आते हैं। चामुंडा माताजी मंदिर, चारभुजानाथ मंदिर, काशीमाता मंदिर, गौतम गौत्र की कुलदेवी रूपण माता मंदिर के प्रति भी लोगों की अगाध आस्था है। नवरात्रि के दौरान इन मंदिरों में श्रद्धालुओं की काफी भीड़ लगी रहती है। बस स्टैंड के पास हनुमानजी का प्रसिद्ध मंदिर है, जहां पर हनुमान जयंती पर मेला लगता है। बताया गया कि राजसमंद जिले में यह पहला मंदिर है, जहां हनुमान जयंती पर मेला लगना शुरू हुआ। उसके बाद राजसमंद शहर के साथ जिलेभर के अन्य हनुमान मंदिरों में हनुमान जयंती पर मेले लगने लगे।

वक्त के साथ बदला रोजगार

कभी इस गांव के खारोल परिवार का मुख्य रोजगार नमक (खारी) निकालना और पत्थर की बड़ी बड़ी शिलाएं निकालकर आस पास के गांवों में बेचना था। अन्य सभी परिवार खेती पर निर्भर थे। वक्त के बदलते दौर में पत्थर की शिलाओं की बिक्री बंद हो गई और वो पत्थर की शिलाएं उठाने वाले लोग भी चल बसे। जहां गहरी खदाने थी, वहां आज तालाब की मानिंद गहरी चट्टानों पर वर्षभर पानी भरा रहता है, जिससे आस पास के कुओं का जल स्तर ऊपर रहता है। गांव के कई लोग आज भी कृषि पर निर्भर है और जैन, ब्राह्मण व अन्य परिवारों ने दूर शहरों तक अपने व्यवसाय विकसित कर दिए हैं। इसके अलावा कुछ युवा निजी कंपनियों में उच्च पदों पर विदेशों तक कार्यरत है, तो कई राजकीय सेवा में भी है।

गांव की प्रतिभाएं

भूपेन्द्र सनाढ्य : बतौर अधिवक्ता से अपने कॅरियर की शुरुआत कर राजसमंद न्यायालय में सिविल मामलों के अनुभवी वकील के रूप में अपनी पहचान बनाई। मगर उपलब्धि का सिलसिला यही नहीं रूका, इन्होंने योग्यता के दम पर पूरे राजस्थान में सबसे कम उम्र में अतिरिक्त जिला एवं सेशन न्यायाधीश बने। वे वर्तमान में जयपुर न्यायालय में कार्यरत है।

शरद बोहरा : मोहनलाल सुखाड़िया युनिविर्सिटी से बी. कॉम करने के बाद पूना से फाइनेंस में एमबीए किया। वर्ष 2007 में जापान से कॅरियर की शुरुआत करने के छह माह बाद सिंगापुर में बार्कलैस फाइनेंस कंपनी में वाइस प्रेसीडेंट के पद पर कार्यरत है।

किशन त्रिवेदी : इंजीनियरिंग में पढ़ाई के बाद कुछ समय गुड़गांव में नौकरी करने के बाद अमेरिका में उच्च पद पर कार्यरत है।

डॉ. कृष्णकांत बोहरा : राजसमंद में अंकुर डेंटल क्लीनिक खोलकर वरिष्ठ दंत विशेषज्ञ के रूप में अपनी पहचान बना रखी है।

घनश्यामसिंह भाटी : मूलत: तेजपुरा के निवासी भाटी फौजदारी मामलों के वरिष्ठ अधिवक्ता है। इसी तरह राज्यावास के सुशील पारासर ने भी अधिवक्ता के तौर पर पहचान कायम की।

अन्य प्रतिभाएं : प्रकाश शर्मा न्यायालय में वरिष्ठ स्टेनोग्राफर के पद पर कार्यरत है। इसी तरह शक्तिसिंह रावल उदयपुर जिले में प्रधानाचार्य है, वहीं विनय त्रिवेदी, नरपत रावल व विष्णु शर्मा शिक्षक है। सोनल त्रिवेदी ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में विदेश में काम किया और वर्तमान में पूना में कार्यरत है।

सरपंच का सपना

कमल के फूलों से सुशोभित तालाब में पानी की आवक बढ़ाकर उसमें नौकायान का सपना है। युवाओं के लिए बेहतर वालीबॉल कोर्ट, गांव में मुफ्त वाईफाई सुविधा, ऐतिहासिक विरासतों का नवीनीकरण की ख्वाहिश है। इसी तरह पिपलांत्री व तासोल की तर्ज पर राज्यावास में एक बीघा चरागाह जमीन पर फलदार पौधरोपणकर स्वरोजगार की दिशा में कार्य करना चाहते हैं।

ये भावी कार्य योजनाएं एवं निर्माणाधीन कार्य

- राज्यावास में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र खुलवाना।
- बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय खुलवाना।
- बालक- बालिकाओं को नि:शुल्क कम्प्यूटर शिक्षण।
- ग्रामीणों के लिए शुद्ध पेयजल के लिए फिल्टर आरओ प्लांट।
- रतन बावड़ी, बस स्टैंड के पास फव्वारा सर्कल का निर्माण।
- चरागाह जमीन पर प्रथम चरण में 300 फलदार पौधे का लक्ष्य।
- जरूरमंद समाज के लिए सामुदायिक भवनों का निर्माण।
- सड़क घूमते लावारिस मवेशियों के लिए गौशाला निर्माण।
- मृत मवेशियों का व्यवस्थित निस्तारण गृह बनाना।
- किसानों को कृत्रिम कृषि उपकरण नि:शुल्क उपलब्ध कराना।
- राज्यावास में सर्वसुविधायुक्त पुस्तकालय का निर्माण करना।
- राज्यावास में औद्योगिक क्षेत्र का विस्तार करना।
- प्रतिभावान छात्र छात्राओं का पंचायत स्तर पर सम्मान करना।
- स्वच्छता के लिए हर गली मोहल्ले में कचरा पात्र लगाना।
- गांव में रोड लाइट व प्रमुख चौराहों पर हाइ मास्क लाइट लगाना।
- गांव में सर्व समुदाय के लिए सर्वसुविधा युक्त श्मशान घाट।
- चरागाह व बिलानाम भूमि पर 5100 पौधे रोपने का संकल्प।
- राज्यावास के युवा संगठन से जुड़कर सरपंच ने रक्तदान शिविर आयोजित किया, जिसमें 104 युनिट रक्त संग्रहित हुआ। साथ ही नियमित शिविर का संकल्प लिया।

राज्यावास पंचायत मुख्यालय पर निर्माणाधीन नाली।

नशामुक्त पंचायत का संकल्प

राज्यावास क्षेत्र मादक पदार्थों की तस्करी का अड्डा बन चुका था। इस पर सरपंच बनने से पहले ही बाबूलाल ने प्रताप सेना का गठन कर नशा उन्मूलन का एक वृहद कार्यक्रम हाथ में लिया है। युवाओं की टोली के माध्यम से न सिर्फ मादक पदार्थों की तस्करी करने वाले बदमाशों को पुलिस के हवाले किया, बल्कि गांव को नशेड़ियों से निजात दिलाई। फिर सरपंच निर्वाचित होने के बाद खारोल ने काछबली व मंडावर पंचायत की तर्ज पर राज्यावास पंचायत को शराबमुक्त बनाने का संकल्प लिया। इसके लिए ग्राम सभा में प्रस्ताव लेकर नियमानुसार ग्रामीणों के हस्ताक्षरित ज्ञापन जिला कलक्टर को दे दिया, मगर हस्ताक्षर सत्यापन की तिथि तय नहीं होने से यह मुहिम अटकी हुई है। सरपंच व ग्रामीण एकजुट हो गए और प्रशासन को चेतावनी दी कि अगर जल्द ही हस्ताक्षर सत्यापन की कार्रवाई पूर्ण नहीं करेंगे, तो ग्रामीणों द्वारा सड़क पर उतर उग्र आंदोलन किया जाएगा।

स्वच्छता की ओर बढ़ते कदम

खुले में शौच मुक्त के लिए प्रेरित किया और घर घर में शौचालय बनाने की मुहिम चला दी। घर घर में शौचालय बनने से खुले में शौच मुक्त के परिणाम आए। साथ ही गड़ोई तलाई किनारे लोगों द्वारा खुले में शौच करने पर तारबंदी करवा दी, जबकि गांव में नालियों व बरसाती पानी निकासी के पुख्ता प्रबंध नहीं होने से स्कूल का खेल मैदान कई महीनों तक पानी व कीचड़ से भरा रहता था। इस पर एक किमी. तक नाले का निर्माण करवाया। इससे लोगों की आवाजाही भी सुगम हो गई और खेल का मैदान भी हमेशा के लिए आबाद हो गया। कीचड़ से सनी सड़कों से निजात दिलाने के लिए प्रत्येक घर पर इंटरलोकिंग टाइल्स लगाकर व व्यवस्थित नालियों का निर्माण कराया।

राज्यावास से राजसमंद विधायक की दावेदारी

राज्यावास पंचायत के तेजपुरा गांव है, जो संख्यात्मक रूप से कम होने के बाद भी राजसमंद जिले की राजनीति में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। गांव के देवीसिंह पूर्व में प्रधान रह चुके हैं। तत्पश्चात देवीसिंह के पुत्र नारायणसिंह भाटी राजसमंद जिला प्रमुख रह चुके हैं। राजसमंद कांग्रेस जिलाध्यक्ष भी रहे, जिन्हें वर्तमान में आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस के प्रमुख दावेदारों में से माना जा रहा है।

गांव में प्रमुख सुविधाएं

गांव की शिक्षा की स्थिति मजबूत दिखाई देती है, क्योंकि गांव के विद्यालय को फाइव स्टार रेंटिंग प्राप्त है। इसी प्रकार गांव में 3 निजी विद्यालय हैं, जिनमें सविता इंटरनेशनल स्कूल, मॉडर्न पब्लिक स्कूल एवं यूनिक एकेडमी हैं। यह कृषि प्रधान गांव है, मगर फिर भी यहां के कई लोग उच्च सरकारी सेवा में कार्यरत हैं, जिसमें भूपेंद्र सनाढ्य एडीजे जयपुर व गांव के शंभू दयाल जयसवाल केंद्रीय मानवाधिकार परिषद के राज्य सचिव हैं। इसी तरह गांव में ग्राम सेवा सहकारी समिति, एसबीआई शाखा, एटीएम मशीन, एक पेट्रोल पम्प व आयुर्वेदिक औषधालय की सुविधा है।

मंदिर बनने तक जूते नहीं पहनने का संकल्प

राज्यावास सरपंच बाबूलाल खारोल ने राज्यावास तालाब के बीच शिव मंदिर नहीं बनने तक पैरों में जूते नहीं पहनने का संकल्प लिया है। खारोल ने ग्रामीणों के साथ मंदिर निर्माण का शिलान्यास कर दिया

और निर्माण कार्य प्रगति पर है। इसके लिए क्षेत्र के भामाशाहों द्वारा भी जनसहयोग किया जा रहा है। खारोल का संकल्प है कि सांसेरा में जलदेवी मंदिर की तर्ज पर राज्यावास तालाब को विकसित करेंगे।

प्रस्तुति : हेमेन्द्रसिंह

सहयोगी : रतनलाल जाट, गेहरीलाल चपलोत, अर्जुनलाल पंचोली, नटवरलाल शर्मा, शंभूलाल खारोल

जयवर्द्धन पत्रिका की पहल से भावी पीढ़ी को मिलेगा प्रोत्साहन, विकास में बढ़ेगा उत्साह

जयवर्द्धन पत्रिका ने राजसमंद के गांवों को इस पुस्तक के माध्यम से सबके समक्ष लाने का जो एक अभियान इस अंक से प्रारम्भ किया है। उसमें राज्यावास गांव से सफर को शुरू करने पर मुझे अत्यंत हर्ष है। इस ग्राम पंचायत का स्नेह मेरे परिवार पर सदा से ही रहता आया है। मेरे पिता श्री देवीसिंह भाटी यहां से लगातार 25 वर्षों तक सरपंच रहे एवं उसके बाद प्रधान भी बने। इस दौरान उन्होंने कृषि प्रधान इस गांव की समस्याओं को समुचित तरीके से निस्तारित करने के प्रयास किए। मुझ पर भी इस पंचायत का प्रेम उसी तरह बना रहा एवं उसी की बदौलत में जिला परिषद सदस्य से जिला प्रमुख पद तक का सफर तय कर पाया। उस दौरान मैंने अपने पदों पर रहते हुए इस गांव का विकास करने का पूरा प्रयास किया। इस गांव में सभी जाति वर्ग के लोग एक परिवार की तरह रहते हैं एवं इस गांव के विकास के लिए सभी लोग किसी भी राजनीतिक दल से ऊपर उठाकर कार्य करने के लिए तत्पर रहते हैं। गलत कार्यों की भर्त्सना करने के साथ सामूहिक रूप से गलत कार्यों का बहिष्कार करते हैं। इस गांव में शिक्षा का स्तर दिन प्रतिदिन बेहतर हो रहा है, जिसे और भी ऊंचाइयों तक ले जाने की आवश्यकता है। साथ ही यहां पर पौधरोपण को लेकर एक बेहतरीन जागृति आ रही है और यहां के युवा आपस में मिल जुलकर पौधरोपण, स्वच्छता व रक्तदान शिविर के माध्यम से समाज को सकारात्मक संदेश दे रहे हैं । मैं आशा करता हूं यह ग्राम पंचायत केवल इस जिले या राज्य में ही नहीं, अपितु पूरे देश में नाम रोशन करें।

नारायणसिंह भाटी, पूर्व जिला प्रमुख राजसमंद एवं गांव तेजपुरा

क्या है शिक्षक की सार्थकता ?

ये बिल्कुल आज का किस्सा है, आज मतलब वर्तमान का किस्सा। एक पुराना किस्सा भी है, पर वो बाद में सुनाऊंगा।

हां तो आज का किस्सा ये है कि मेरे एक मित्र है, जिसका नाम अनुराग शर्मा। अनुराग पढ़ने- लिखने में शुरू से तेज़ था। हालांकि की शुरू में गांव में पढ़ा लिखा, पर तेज दिमाग और सक्षम परिवार के होने की वजह से उच्च शिक्षा प्राप्त करके पास ही शहर के बैंक में बैंक मैनेजर के बाद वाली पोस्ट पर लग गया। वेतन भी भरपूर था, पर अनुराग की दिली तमन्ना थी कि वो सरकारी शिक्षक बनकर देश की सेवा करें और बच्चों में चरित्र निर्माण करके राष्ट्र निर्माण में अपना सहयोग दें। उसने शुरू से गांव वालों की नज़र में शिक्षकों को मिलने वाले सम्मान को देखा था, जहां शिक्षक सिर्फ छात्रों के गुरु नहीं होते, अपितु पूरे गांव के गुरुजी हुआ करते थे। अनुराग को बैंक की नौकरी में वेतन तो पूरा मिलता, पर वो सम्मान नहीं मिलता, जो एक शिक्षक को गांवों में मिलता है।

तभी शिक्षक भर्ती की परीक्षा आयोजित हुई। अनुराग को जैसे मन मांगी मुराद मिल गई। बैंक की जॉब छोड़ कर उसने भी वो परीक्षा दी और आसानी से उत्तीर्ण होकर शिक्षक बन गया। पहली पोस्टिंग ही गांव में मिली। हालांकि की वेतन तो नाम मात्र का था, पर वेतन की चाह तो उसे थी भी नहीं। उसे तो सम्मान की चाह थी, पर विद्यालय में जाकर पहले दिन से ही उसे समझ आने लगा कि हालात अब पहले जैसे नहीं है। सरकारी विद्यालयों में जो बच्चे आते है। उनके पास पढ़ने को किताबें और लिखने को नोटबुक तक नहीं है। वे मात्र यहां मिड डे मिल खाने और छात्रवृति लेने के लिए आते है। पढ़ाई से उनका दूर दूर तक कोई सरोकार नहीं। बच्चों के माता पिता के लिए अनुराग और उसके जैसे शिक्षक एक मास्टर से ज्यादा कुछ नहीं। वो मास्टर जिसे सरकार तनख्वाह देती है और उस तनख्वाह पर ये ऐश करते है। सम्मान तो दूर की बात, उन्हें नाम तक से नहीं पुकारा जाता। सभी शिक्षकों के लिए सिर्फ एक नाम 'सरकारी मास्टर'। 6 महीने जैसे तैसे निकालें और फिर एक दिन अनुराग ने कुछ शरारती बच्चों को पीट दिया। पीटा क्या, 2 थप्पड़ मारी। उन्हीं बच्चों में एक बच्चा किसी छुटभैये दलित नेता का था। अगले दिन के अखबार में खबर छपी की अध्यापक ने दलित बच्चों को बेरहमी से पीटा और इधर पूरा का पूरा गांव लाठी डंडे लेकर मास्टर अनुराग को खोजते हुए विद्यालय पहुच गया। बड़ी मुश्किल से प्रधानाध्यापक जी ने अनुराग को विद्यालय की पिछली दीवार से कुदवा कर बचाया। बन्दा वहां से भागा तो सीधा शहर में अपने घर आकर रुका।

अब देश सेवा, राष्ट्रनिर्माण और शिक्षक सम्मान का भूत उसके दिमाग से उतर चुका था। आज अनुराग एक बैंक मैनेजर की हैसियत से बड़े शहर में कार्यरत है और शिक्षक रूपी दु:स्वप्न याद करके सिहर उठता है।

अब वो पुराना किस्सा सुनिये। मेरा अपना किस्सा है। क्योंकि मैं भी इसमें शामिल हूं। सन् 1996-97 में कांकरोली के श्री बालकृष्ण विद्या भवन स्कूल में पढ़ता था। उस जमाने में हम विद्यार्थियों में श्री दीनदयालजी पालीवाल सर का बड़ा खौफ हुआ करता था। पढ़ाने को तो वो सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाते थे, पर विद्यार्थियों को काबू में रखने की गणित उन्हें अच्छे से पता थी। उन्होंने कभी हाथ में छड़ी नहीं रखी, पर उनकी आवाज और व्यक्तित्व में ही वो क्षमता थी कि बच्चे उनके सामने थर थर कांपते थे। पढ़ाई या होमवर्क के मामले में चाहे सुताई कम करते, पर अनुशासनहीनता उनकी बर्दास्त से बाहर की चीज थी। कालांश के दौरान अगर कोई बच्चा बाहर घूमता नज़र आ जाए, तो उसके गाल लाल होने निश्चित थे। कुटाई के मामले में कभी किसी के साथ भेदभाव नहीं करते। प्रसाद सबको बराबर मिलता। खौफ इतना कि सिर्फ उनके स्कूल में होने का डर ही काफी था बच्चो के लिए। एक दिन मुझे भी मार पड़ी। किसी छोटी सी शरारत की वजह से...। मैंने घर पर आकर रो रो के सर की शिकायत की। अगले दिन पिताजी स्कूल आकर सर से बोले कि दीपक अगर अगली बार फिर से कहना ना माने तो 2 थप्पड़ मेरी तरफ से और ज्यादा लगाना।

ये दो घटनाएं हैं, जो आपके सामने है। फैसला हमें करना है कि हमे कैसा भविष्य चाहिए। ऐसा भविष्य जो आज मिड डे मील खाकर छात्रवृत्तियां लेकर जीवनभर कटोरा लेकर सरकार के सामने खड़ा रहे या गलती पर गुरु की मार खाकर स्वावलंबी बन देश की सेवा करें।

कुल मिलाकर आज ये बातें समझ आने लगी है कि 16 से लेकर 20 की उम्र तक घर वालों का प्यार और टीचर्स की मार दोनों ही साथ साथ जरूरी क्यों होती है। बहकने और भटक जाने की उस उम्र में उन्होंने और दूसरे शिक्षकों ने प्यार और मार के बल पर हमें सही रास्ता दिखाया और जिन विद्यार्थियों ने अपने शिक्षक के प्रति सम्मान और समर्पण के भाव रखे। वे सभी चाहे वे 10वीं या 12वीं की मेरिट लिस्ट में भले ही ना आए हो, पर वे जहां कहीं भी होंगे, अपने जीवन की मेरिट लिस्ट में जरूर सफल होंगे।

सच में अगर आप एक सफल जीवन जी रहे हैं, तो उसमें आपके शिक्षक का भी बड़ा योगदान होगा और इसीलिए शिक्षक होना दुनिया जहान की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक है। क्योंकि एक शिक्षक बनकर आप व्यक्ति निर्माण करते हैं। वहीं व्यक्ति आगे चल कर समाज और देश का निर्माण करता है।

इस विषय पर ओशो ने बड़ी गहरी बात लिखी है– 'अभी मैं गया, अभी कुछ ही दिन पहले शिक्षकों की एक बड़ी विराट सभा में बोलने। शिक्षक दिवस था, तो मैंने उनसे कहा कि एक शिक्षक यदि राष्ट्रपति हो जाए तो इसमें शिक्षक का सम्मान क्या है? इसमें कौनसे शिक्षक का सम्मान है? मेरी समझ में आए, एक राष्ट्रपति शिक्षक हो जाए तब तो शिक्षक का सम्मान समझ में आता है, लेकिन एक शिक्षक अगर राष्ट्रपति हो जाए, इसमें शिक्षक का सम्मान कौनसा है? एक राष्ट्रपति शिक्षक हो जाए और कह दे कि यह व्यर्थ है और मैं शिक्षक होना चाहता हूं और शिक्षक होना आनंद है, तब तो हम समझेंगे कि शिक्षक का सम्मान हुआ। लेकिन एक शिक्षक राष्ट्रपति हो जाए, इसमें शिक्षक का सम्मान नहीं है, राजनीतिज्ञ का सम्मान है। इसमें राजनेता का सम्मान है'

शिक्षक दिवस के अवसर पर उन सभी शिक्षकों को हृदय से प्रणाम जो व्यक्ति और राष्ट्र निर्माण का बीड़ा उठाए अपने घर परिवार, चुनाव वोटिंग, जनगणना, मिड डे मील, चुनावी सभा, रैलियों और ऑफिस की सारी जिम्मेदारियों को एक साथ निभाते हुए भी मल्टीपल पर्सनलिटी डिसऑर्डर का शिकार नहीं हुए है।

दीपक जैन चोरड़िया
कांकरोली, राजसमंद

हिन्दी साहित्य संवर्द्धक भगवतीप्रसाद देवपुरा

मेवाड़ में राजसमन्द ज़िले की प्रसिद्ध धर्मनगरी नाथद्वारा के प्रसिद्ध साहित्य विद्वान श्री भगवतीप्रसाद जी देवपुरा सृजनात्मक सोच के महान पुरुष थे, जिनका तमाम जीवन हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार तथा उत्थान के लिए समर्पित था।

प्रसिद्ध विद्वान स्व. ऋषि जैमिनी ने अपने ग्रन्थ 'श्री कृष्ण' की सप्तपुरिया में लिखा है– 'नाथद्वारा की एक विभूति स्वयं श्रीनाथ जी है और उसके बाद एक विभूति स्वयं भगवती प्रसाद देवपुरा है।' देवपुरा ने राष्ट्र भाषा हिन्दी और ब्रजभाषा के लिए जीवनभर अपूर्व कार्य किया। पूरे देश के हिन्दी और ब्रजभाषा के साहित्यकारों को हर वर्ष साहित्य मंडल के मंच से सम्मान करते थे। साथ ही नगर के ख्यातनाम नागरिक और शिक्षा में सर्वोच्च विद्यार्थियों व श्रीनाथजी मंदिर के सेवादारों का भी सम्मान करते थे। समय के पाबंद आयोजन को निर्धारित समय पर शुरू कर निश्चित समय पर साहित्य समारोह समाप्त करने की महारथ हासिल थी।

मुख्य अतिथि के समय पर नही पहुंचने पर उसके बिना ही तय समय पर आयोजन शुरू कर समय की कीमत का महत्व समाज को बताते थे। उनकी प्रेरक राष्ट्रभाषा सेवा से प्रभावित होकर हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उन्हें अपनी सर्वोच्च मानद उपाधि साहित्य वाचस्पति प्रदान कर अपनी संस्था का सभापति तथा अध्यक्ष पद प्रदान कर स्वयं को गौरवान्वित किया।

निरन्तर 28 वर्ष तक राष्ट्रभाषा हिन्दी और ब्रज भाषा का विराट आयोजन कर श्रीजी की नगरी में काव्य की धारा प्रवाहित की। उनके जैसी प्रेरक मिसाल मिलना असम्भव लगता है। साहित्य में श्रेष्ठ कीर्तिमान स्थापित करने वाले भगवतीप्रसाद का जन्म मेवाड़ के प्रसिद्ध कस्बे जहाजपुर में 13 अक्टूबर 1927 को पिता कस्टम अधिकारी श्री लक्ष्मी चन्द और मां रतन कुंवर देवी के घर हुआ। तीन वर्ष के बाद देवपुरा के छोटे भाई का जन्म हुआ। भगवतीप्रसाद जब चार वर्ष के थे, पिता का पीलिया रोग के कारण अचानक निधन हो गया। पिता के निधन के कुछ दिनों पश्चात माता अपने दोनों पुत्रो को लेकर नाथद्वारा आ गई और मज़दूरी कर अपने बच्चों का पालन पोषण किया।

देवपुरा को बचपन से ही पुस्तकें पढ़ने का शौक था। जब छठी क्लास में थे, तब मोती महल के खुर्रे पर स्थित वाचनालय के सदस्य बन इस पुस्तकालय की सभी पुस्तकें पढ़ ली। सन् 1941 में लाल बाजार में सत्येश पुस्तक भंडार स्थापित किया। सन् 1945 में उदयपुर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन हुआ। साहित्य मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष शिव कुमार शास्त्री तब श्रीनाथजी के दर्शन करने आए, तब भगवती प्रसाद से प्रभावित होकर साहित्य मण्डल पुस्तकालय का मंत्री बनाकर संस्था से सदा सदा से जोड़ दिया। फिर तन मन से मंडल के प्रचार प्रसार और साहित्य सेवा में पूरी लगन से लग गए। 18 वर्ष की आयु में विवाह लक्ष्मी कंवर से हुआ और शादी के बाद नाथद्वारा से केलवा चले गए, जहां एक छोटा सा स्कूल खोला व राजपूत बालकों को पढ़ाने लगे। साहित्य रत्न परीक्षा उत्तीर्ण करने के कारण पूज्यपाद गोस्वामी गोविंदलाल जी ने 18 जनवरी 1949 को मन्दिर बड़ा बाजार नाथद्वारा में संचालित स्कूल में अध्यापक पद पर नियुक्त किया।

1 फरवरी 1950 में संचालित स्कूल को सरकार ने अपने अधिकार में ले लिया, जिससे सरकारी अध्यापक बन गए और साथ में साहित्य मण्डल का कार्य भी करते रहे। कहानी, कविता, लेख लिखते रहे। सन् 1979 को एस.डी.आई. बना दिया। इसके तहत देवपुरा ने अनेक बिगड़ी हालत के स्कूलो को आदर्श स्कूल के रुप में विकसित कर दिखाया। 1982 में राजकीय सेवा से सेवानिवृत होकर फिर नाथद्वारा आ गए और पूरी तरह से साहित्य मंडल के मंच से साहित्य के प्रचार प्रसार के लिए अर्पित हो गए।

सन् 1987 को ब्रजभाषा अकादमी के सहयोग से नाथद्वारा में साहित्य मण्डल की ओर से अष्टछाप समारोह और ब्रजभाषा कवि सम्मेलन का आयोजन किया। साहित्य मंडल का ये पहला भव्य आयोजन था। नगर में इसकी दिल खोलकर प्रंशसा हुई। तब श्रीनाथजी का पाटोत्सव व ब्रजभाषा समारोह के आयोजन हर वर्ष करने की घोषणा की गई, जो आज भी निरन्तर जारी है।

14 सितम्बर को 'हिन्दी लाओ, देश बचाओ...' नाम से दो दिवसीय आयोजन हुआ, जिसमें देश के श्रेष्ठ साहित्य के साथ गद्य

और पद्य विधा के समस्त कवि और लेखक हिस्सा लेने लगे। ये दो बड़े आयोजन 28 वर्ष से निरन्तर हो रहे हैं। देवपुरा का स्वर्गवास हो जाने के पश्चात भी उनके सुपुत्र श्यामप्रकाश देवपुरा व समस्त परिवार के सानिध्य में आयोजन हो रहे हैं।

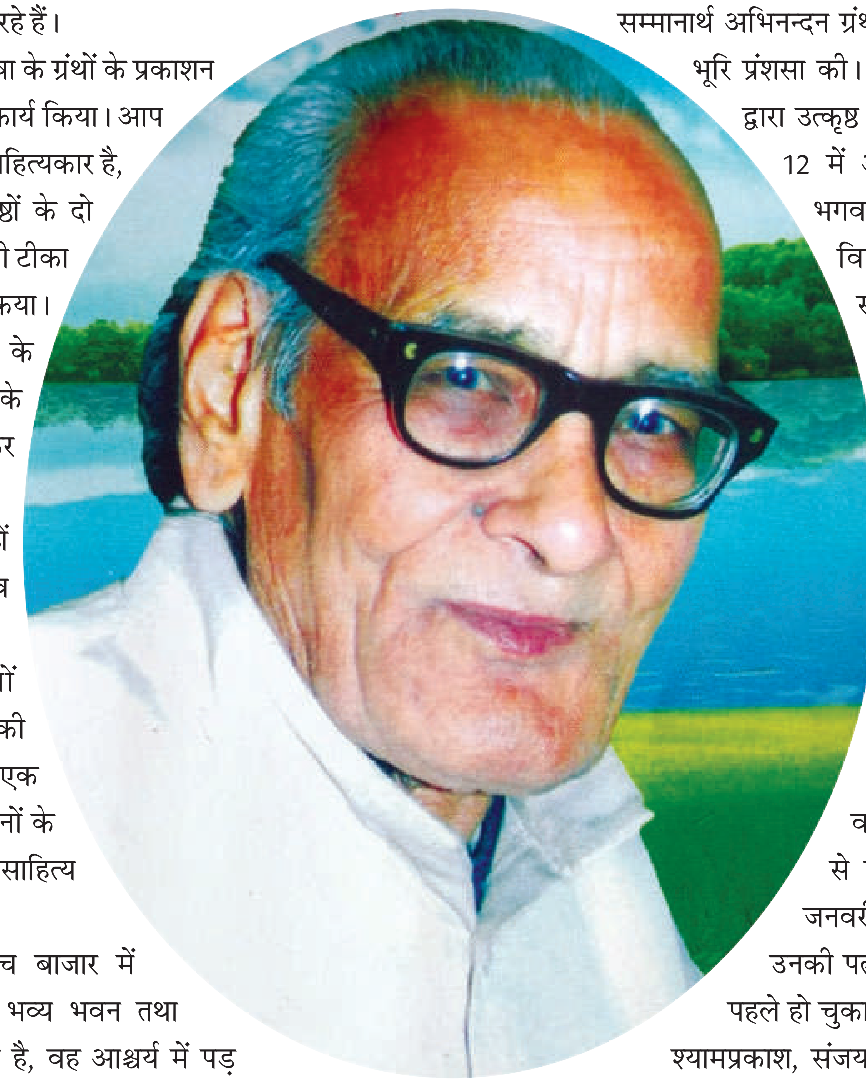

हिन्दी और ब्रजभाषा के ग्रंथों के प्रकाशन में भी देवपुरा ने अद्वितीय कार्य किया। आप हिन्दी संसार के एकमात्र साहित्यकार है, जिन्होंने 1500- 1500 पृष्ठों के दो भागों में समस्त सूरसागर की टीका कर उसे प्रकाशित किया। सूरसागर की टीका करने के प्रयास तो कई हुए, मगर इनके अलावा पूरा कोई नहीं कर पाया।

अष्टछाप के आठों कवियों के समस्त कृतित्व को विद्वानों के आलोचनात्मक निबंधों सहित प्रकाशित कर हिन्दी की सेवा की है। अष्टछाप के एक एक कवि के कृतित्व विद्वानों के निबंध सहित ग्रन्थ देश में साहित्य मंडल ने ही छापे हैं।

नाथद्वारा के बीच बाजार में स्थित साहित्य मंडल के भव्य भवन तथा पुस्तकालय जो को देखता है, वह आश्चर्य में पड़ जाता है पुस्तकालय में 50 हजार पुस्तकें हस्तलिखित ग्रंथ एवं अनेकों पत्र पत्रिका है। वर्तमान में पुस्तकालय की पाठक संख्या 1668 है। नाथद्वारा के चौपाटी पर स्थित साहित्य मण्डल के बाल पुस्तकालय में लगभग 13 हजार पुस्तकें है तथा यहां की पाठक संख्या 767 है। सम्पूर्ण देश से आने वाली विभिन्न विषयों से विभूषित 170 पत्र पत्रिका से युक्त ये अनोखा वाचनालय है। इस पुस्तकालय की खास बात यह है कि इसका संचालन बिना सरकारी अनुदान के होता है। साहित्य मण्डल के परिसर में माध्यमिक विद्यालय संचालित है, जिसमें 600 छात्र छात्राएं तथा 21 अध्यापक सेवारत है।

भगवती प्रसाद को देश की अनेकों साहित्य संस्थाओं ने सम्मानित किया है। सर स्मारक मण्डल सूर पीठ आगरा द्वारा महाकवि सूरदास सम्मान व ताम्र पत्र, ब्रजनिधी, सेवा ट्रस्ट द्वारा मेघश्याम स्मृति सम्मान, बसंती देवी वाणी द्वारा ब्रज विभूति सम्मान ताम्र पत्र, प्रीति क्लब जयपुर द्वारा तुलसी सम्मान, यूएसएम पत्रिका गाज़ियाबाद द्वारा राष्ट्रभाषा शिरोमणि, राष्ट्रीय हिन्दी परिषद् मेरठ द्वारा हिन्दी रत्न सम्मान, कदम साहित्य संस्था द्वारा ब्रजवाचस्पति उपाधि, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने 14 जनवरी 2011 को आपके सम्मानार्थ अभिनन्दन ग्रंथ प्रकाशित कर आपकी भूरी भूरि प्रंशसा की। राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा उत्कृष्ठ हिन्दी सेवा के लिए 2011-12 में अमृत सम्मान प्रदान किया। भगवती प्रसाद जहां सादगी, विनयशीलता और अतिथि सत्कार के सौन्दर्य के साकार स्वरूप थे, वहीं अनुशासन और समय की पाबंदी के संबंध में वे किसी से किंचित मात्र भी समझौता नहीं करते थे।

साहित्य की सच्ची सेवा के सारथी श्रीनाथजी की धार्मिक नगरी नाथद्वारा में रहकर समस्त भारत में अपनी अलग पहचान बनाने वाले देवपुरा ने स्वाभाविक रूप से घर पर बोलते बोलते ही 6 जनवरी 2014 को देहत्याग दी। उनकी पत्नी लक्ष्मी कंवर का स्वर्गवास पहले हो चुका था। उनके परिवार में दो पुत्र श्यामप्रकाश, संजयप्रकाश और दो पुत्रियां राधा रानी और कृष्णा व पौत्र- पौत्रियां व नातियां है। आज साहित्य जगत में देवपुरा की उपलब्धि बेमिसाल मानी जाती है।

आपके व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में डॉ. विष्णुचन्द्र पाठक के लिखे आलेखों से और श्याम देवपुरा से कई रोचक जानकारी मिली, जिनके सहयोग के लिए मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। साथ ही देवपुरा जैसे माटी के लाल को कोटि कोटि वन्दन।

प्रस्तुति
सूर्य प्रकाश दीक्षित
काव्य गोष्ठी मंच, कांकरोली
मो. 94146-21730

तीखी मिर्ची

सत्ता का जयकारा

विजय शर्मा @ राजसमंद
liverajsamand.com 9414239648

आजकल हर तरफ जय बाबा री... गूंज रहा है। पैदल यात्री हाथ में झंडा लेकर जयकारा लगाते हुए नजर आते हैं। अपने आराध्य बाबा रामदेव के प्रति इतनी श्रद्धा है कि दूर दूर से अपने सब काम धंधे छोड़कर महीनेभर पैदल चलकर यात्रा करते हैं।

जयकारे से याद आया हमारे नेताजी कुछ लोगों को बुला बुला कर जयकारे लगवा रहे हैं। ये चाहते यहीं है कि चाहे उनके काम से जनता को लाभ हो या नहीं हो, मगर जनता उनके जयकारे लगाने में कोई कसर नहीं छोड़े।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जयपुर रैली में पूरे राजस्थान के विभिन्न सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों को इकट्ठा किया गया और उनसे सरकार की वाहवाही कराई गई। ये बात अलग है कि खुद की पीठ थपथपा कर सरकार चाहे कितनी ही खुश हो ले, पर जयपुर की जनता का 2 दिन जीना मुहाल हो गया था। इसी तर्ज पर वसुन्धरा सरकार ने इस सरकार के दौरान नौकरी प्राप्त शिक्षकों को सरकारी खर्चे पर जयपुर बुलाया है, जिसमें राजसमंद जिले के कुल 2004 शिक्षक है, जो 5 सितंबर को जयपुर पहुंचे। जिन 500 स्कूलों में सिर्फ एक एक शिक्षक ही है, तो वो स्कूल उस दिन शायद बंद ही रहे, मगर इस बात की सरकार को कोई परवाह नहीं है। क्योंकि सरकार को पढ़ाई से ज्यादा चिन्ता आने वाले चुनाव की है। वैसे देखा जाए तो सरकारी शिक्षक की हालत तो गरीब की लुगाई जैसी हो चुकी है। पढ़ाने से लेकर मिड डे मील बनाने तक और जनगणना से लेकर चुनाव प्रक्रिया करवाने तक का सरकारी ठेका इन्ही पर है। असली जयकारे के हकदार तो ये सरकारी शिक्षक है।

सरकारी योजना से लाभान्वित करके आमजन को तो अब सरकार ने मात्र कठपुतली समझ लिया है। तभी तो प्रधानमंत्री की सभा के बाद मुख्यमंत्री ने भी लाभार्थियों से संवाद के बहाने नगरीय निकाय में नई भर्ती से चयनित सफाईकर्मियों से लेकर अनुजा निगम से ऋण लेने वाले बेरोजगार युवाओं तक को भी जयपुर बुला लिया। इनके लिए भी जिला प्रशासन के निर्देशन में अफसर व कार्मिकों की ड्यूटी लगाई और बसों का प्रबंध परिवहन महकमे द्वारा की गई।

अभी थोड़े समय पहले नोटबंदी हुई थी। सरकार ने कहा कि यह पिंजरा कालाधन को पकड़ने के लिए लगाया गया है। डेढ़ वर्ष तक हम भी सरकार के छप्पन इंची कड़े कदम का जयकारा लगाते रहे। अब पता चला कि इस पिंजरे में कालेधन के नाम पर एक मरियल चूहा भी कैद नहीं हुआ। उल्टा नोटबन्दी ने खुदरा बाजार की नसबंदी करके रख दी। अभी पिछले दिनों एक कट्टर देशभक्त मित्र 'वारे म्हारा मोदीजी कई लेहर चला दी रे...' गाने पर ठुमक रहे थे। मैंने उनसे कहा नोटबंदी से जिन जिन कालेधन वालों को फायदा हुआ, उनका भी एक लाभार्थी संवाद समारोह तो आयोजित किया जाए, देश को पता तो चले कि इस किरान्तिकारी योजना का किस किसको फायदा हुआ है।

इस तरह के समारोह में बड़ी संख्या देखकर नेता आत्ममुग्ध तो हो जाते हैं, मगर जयकारे लगाती ये भीड़ मतदान के वक्त भी क्या सत्ता के पक्ष में बनी रहेगी, यह सोचने का विषय है।

उल्लेखनीय कार्य पर स्वतंत्रता दिवस के जिला स्तरीय समारोह में 46 प्रतिभाओं का सम्मान

उच्च शिक्षा मंत्री ने फहराया तिरंगा

जयवर्द्धन न्यूज @ राजसमंद
liverajsamand.com

जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह श्री बालकृष्ण स्टेडियम में आयोजित हुआ। उच्च शिक्षा किरण माहेश्वरी ने तिरंगा फहराकर मार्च पास्ट की सलामी ली। इस दौरान विभिन्न स्कूलों के छात्र छात्राओं ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां भी दी। फिर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने पर 46 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस दौरान सांसद हरिओमसिंह राठौड़, जिला प्रमुख प्रवेश कुमार सालवी, सभापति सुरेश पालीवाल, जिला कलक्टर श्यामलाल गुर्जर सहित कई प्रबुद्धजन थे।

समारोह में पूर्व सैनिक ऑनरेरी सूबेदार मेजर डूंगरसिंह, इंग्लिश चैनल पार करने वाले केलवा के जगदीशचंद्र तेली, नेत्रहीन अध्यापिका ममता जैन, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्केटिंग खिलाड़ी गर्वित बोहरा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्केटिंग खिलाड़ी केशवलता, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्केटिंग खिलाड़ी भव्य बोहरा, भामाशाह तनसुख बोहरा, भामाशाह नरेंद्र कुमार बोहरा, चित्रकार नीलेश शर्मा, दिव्यांग विष्णु जाटव, पौधरोपण में बाबूलाल शर्मा, आमेट तहसीलदार किशनलाल, एईएन जलदाय विभाग शंकरलाल गायरी, सामाजिक कार्यकर्ता कुमारी विजयश्री, भ्रष्टाचार ब्यूरो के लेखा संबंधित कार्य के लिए यशवंतसिंह अहाड़ा, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो से सीता खंडेलवाल, पशुधन सहायक वरदीचंद जीनगर, आरके अस्पताल मेलनर्स रायसिंह राठौड़, कुश्ती प्रशिक्षक जगदीश चन्द्र जाट, शारीरिक शिक्षक श्यामसिंह सिसोदिया, मधुसूदन जोशी, खिलाड़ी साउथ एशियन चैंपियनशिप कार्तिकराज सिंह, साउथ एशियन चैंपियनशिप खिलाड़ी नानू जोशी, साउथ एशियन चैंपियनशिप खिलाड़ी आर्या जोशी, साउथ एशियन चैंपियनशिप खिलाड़ी प्रियंका जोशी, सह शैक्षिक गतिविधियों में मृत्युंजय दर्जी, माया कुंवर, शिवराज बैरवा, सुल्तान सिंह, स्वच्छता मिशन के लिए नानालाल सालवी, छात्रा प्रधी आचार्य, एनसीसी में सार्थक चौधरी, नाथद्वारा कॉलेज से गत गणतंत्र दिवस पर दिल्ली में स्वर्ण पदक पाने पर युधिष्ठिर कुमावत, राष्ट्रीय स्तर कुश्ती में शिवदत्त चौधरी, विद्युत निगम हेल्पर सुंदरलाल, सफाई कर्मचारी गीता देवी, प्राध्यापक रूपेश चन्द्र पालीवाल, शारीरिक शिक्षक सुनील कुमार शर्मा, छात्र श्रेयश लड्ढा, छात्रा पूजा बोहरा, जुड़ो चैम्पियन वंशिका शर्मा, युवा ब्रह्मशक्ति मेवाड़ संस्थान राजसमंद, छात्रा गौरी मांडोत, आदि को सम्मानित किया जाएगा।

चार पत्रकारों का भी जिला स्तर पर सम्मान

सामाजिक मुद्दों को उठाकर एवं सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय कार्य करने पर जिला स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में दैनिक भास्कर राजसमंद के क्राइम रिपोर्टर नरपतसिंह चौहान, दैनिक नवज्योति के ब्यूरो चीफ सुरेश भाट, प्रातःकाल नाथद्वारा के संवाददाता जगदीश पालीवाल एवं राष्ट्रदूत के भीम संवाददाता एवं जयवर्द्धन पत्रिका के भीम के उपखंड प्रभारी पत्रकार हीरालाल भाट का भी उच्च शिक्षा मंत्री, सांसद व जिला प्रमुख द्वारा सम्मान किया गया।

विकसित उद्यान व पौधों को पानी सींचते सरपंच

तालाब किनारे बनाई रिंग रोड व पौधरोपण

इंटरलॉकिंग टाइल्स से पक्की सड़कें

राज्यावास से राजसमंद व मोही मार्ग पर निर्माणाधीन सर्कल।

राज्यावास तालाब में कमल के फुल बहुतायत में उग रहे हैं। तालाब पर कई विदेशी पक्षियों का भी बसेरा है, जिसे देखने के लिए पर्यटक भी आने लगे हैं।

रूपण माता

राज्यावास में गटालिया श्याम मंदिर

राज्यावास से राजसमंद व मोही मार्ग पर निर्माणाधीन सर्कल।

राज्यावास चरागाह विकास

कथा पच्चीसी

आज जैसे ही सुबह सुनील के एक्सीडेंट की खबर पढ़ी, मेरा पूरा वजूद हिल गया। वह अस्पताल में भर्ती है। कॉलेज की पढ़ाई हम दोनों ने साथ साथ की थी। मेरी नज़रों के सामने उसका हंसता– मुस्कुराता चेहरा आ गया। कॉलेज का सबसे खुशमिज़ाज लड़का, सबका चहेता दोस्त। मैं नहाकर तैयार हुआ और थके थके से कदमों से बस स्टैंड पहुंचा। उससे मिलने के लिए मुझे उदयपुर जाना था। चार घंटे का सफर इतना थकाऊ तनाव भरा रहा, जैसे मैं मिलों दौड़ लगाकर पहुंचा हूं। अस्पताल के रिसेप्शन काउंटर से पताकर ऑर्थोपेडिक वार्ड के बैड नं. पच्चीस पर पहुंचा। उसकी बेबस हालत देखकर मेरी आंखें भर आई। रीड व गर्दन में फैक्चर आने से चेहरे पर सूजन थी। सिर पर ट्रेक्शन लगाकर छह किलो वैट लटका रखा। था। गर्दन से नीचे का सुन्न हो गया था। बोल भी नहीं पा रहा था। सिर्फ और सिर्फएक जिन्दा लाश पलंग के ऊपर। पास उसके परिजनों का मेला सा लगा था। उसकी पत्नी डरी सहमी घूंघट निकाले पलंग के पास वीरान आंखों से एकटक सुनील को देख रही थी। मां और पिताजी भी रो ही रहे थे। छोटे भाई बहन उदासीयों की चादर में लिपटे खड़े थे। सुनील का एक चार साल का पुत्र जरूर दिन दुनिया से बेखबर वार्ड में इधर उधर घूम कर खेल रहा था। यह सब देख मेरा हृदय फटा जा रहा था। सुनील कभी इधर, कभी उधर देखते हुऐ आंसुओं से तरबतर हो रहा था। मैनें उसका हाथ अपने हाथ में लिया तो मानों आंसुओं का सैलाब बंध टूट गया। मैंने पुछा– अब कैसे हो ? तो पलकों को झपक कर इशारा किया ठीक हूं।

मुझे अपने ही सवाल पर शर्मिंदगी महसूस हुई। दिनभर उसके परिजनों से बात कर शाम की बस से वापस अपने घर आ गया। समय अपनी चाल चलता रहा। मैं भी घर गृहस्थी, पत्नी बच्चों और नौकरी के चक्कर में उसे कब भूल गया, पता ही नहीं चला।

आज ठीक पच्चीस वर्षों के बाद फेसबुक पर सुनील की फोटो देखी। एक बहुत सुन्दर कविता पोस्ट की थी उसने। नीचे पूरा पता और मोबाइल नंबर दे रखे थे। मन के किसी कोने में पड़ा पुरानी दोस्ती का बीज अचानक अंकुरित हो गया। खुशी के मारे चीख निकल गई। मेरी पत्नी और बच्चे ऐसे देखने लगे जैसे मैं पगला गया हूं। पत्नी और बच्चों ने एक साथ सवाल दागा, क्या हुआ ? मैनें एक दो लम्बी सांसे ली और संक्षिप्त में कॉलेज के फ्रेंड सुनील के बारे में बताया। आत्मग्लानि से भरा जैसे तैसे उठा और पत्नी से कहकर सुनील से मिलने निकल पड़ा। अब मेरे पास कार थी और मात्र चालीस किलोमीटर पर था, उसका गांव। उत्सुकता और दुविधा में पड़ा आगे बढ़ता रहा। सवाल यह था कि जो इंसान पूर्णतया अपाहिज हो गया वह आज तक जिन्दा कैसे है ? ओह! पच्चीस वर्ष। एक घंटे से भी कम समय में मैं पहुंच गया सुनील के घर। गांवों में अधिकतर खुले आंगन होते हैं। मुख्य दरवाजा खुला पड़ा था। सामने एक अधेड़ सा व्यक्ति लेटे लेटे कुछ लिखने में मशगूल था। मैनें हल्की दस्तक दी और कहा– हेलो... तो उसने मेरी तरफ देखा। मैं पहचान नहीं पाया पर, उसने चिरपरिचित मुस्कुराहट के साथ एक क्षण गंवाए कहा सुखपाल चौधरी तुम! आज अचानक कहां से प्रकट हो गए।

मैं सकपका गया। अन्दर जाकर उससे गले मिला, हालचाल पूछे। सुनील के हाथ काम करने लगे थे। आत्मविश्वास से लबरेज़। खुद उठकर दीवार के सहारे बैठ गया। यूरीन पॉट लगाकर पांवों पर तहमद डाल दी।

पूछा मैनें घर पर कोई नही है ? उसने कहा कि तीनों अनुज शहर में रहते हैं। अपने अपने परिवारों के साथ। मां और पत्नी खेत पर गए हैं। पापा पास के कस्बे में। अकेले काफी कुछ कर लेता हूं। कहीं जाना हो तो रोटी, पानी रख जाते हैं। हाथों में जान आई तब से कविता, कहानियां और इतिहास पर कुछ लिखने की कोशिश कर रहा हूं। फिर मैनें पूछा– तेरे एक बच्चा था शायद। उसने कहा– डिफेन्स सर्विस में है, शादी भी कर दी, दो पौत्रियां है मेरे। उसका चेहरा दिखा रहा था कि कितना खुश है। उसका आत्मविश्वास और जीवन जीने की जिद्द देखकर मैं दंग रह गया। कुछ पूछताछ मेरे बारे में भी की। अपने अतीत में झांकते हुऐ मुझसे पूछा कि– ऐसा होता है, क्या कि किसी को रोज राह चलते पच्चीस पैसे का सिक्का मिले।

फिर बोला– यार सुखपाल, देख यह शुरूआत हुई 25 जनवरी 1991 को। मैं प्राईवेट स्कूल में पढ़ाता था। सुबह घर से निकला तो दरवाजे के बाहर 25 पैसे पड़े मिले। स्कूल पहुंचा तो मेरी टेबल पर दो 25 पैसे के सिक्के पड़े थे। बच्चों के साथ मैदान में गया तो 25 पैसे पड़े नजर आए। 25 जनवरी 1991 से यह क्रम रूक रूककर लगातार एक वर्ष चला। कभी बाथरूम में 25 पैसा तो कभी साबुनदानी में तो कभी रसोई में तो कभी बिस्तर पर। कुछ देर रूका फिर आगे बताने लगा कि सुखपाल, मेरे दादोसा की मृत्यु 25 तारीख को हुई। उनके पांच साल बाद दादीसा भी 25 तारीख को शांत हुई। कॉलेज में मैं बॉयजफंड से अस्थाई पद पर टाइपिस्ट लगा, जहा से मुझे पांच माह बाद 25 तारीख को हटाया।

एक लम्बी दर्दभरी सांस लेकर बड़े अफसोस से बोला– यार 25 जनवरी 92 को रात 10 बजकर 25 मिनट पर मेरा एक्सीडेंट हुआ। बैड नं. 25 मिले। तीन माह 25 दिन भर्ती रहा और आज ठीक 25 तारीख को 25 साल बाद तेरे से मुलाकात हुई।

मैं तो जैसे बुत बन गया। पूरे शरीर में सिहरन होने लगी थी। डर मिश्रित आश्चर्य के भाव मस्तिष्क में साथ साथ उभर गए। मैं हक्काबक्का उसे देख रहा था।

सुनील बोला– यार ये कोई दैवीय संदेश थे या मेरे प्रारब्ध से जुड़े संयोग थे। मैं नि:शब्द था। उसे क्या समझाता। अंत में उसने बताया कि यूं ही घसीटकर मरने से अच्छा है, ताकत से जिन्दगी जी लूं। कुछ करूं और आज मेरी सामाजिक संदर्भ की दो पुस्तकें समाज में है। दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। लघुकथाओं का संग्रह तैयार हो रहा है।

सामान्य शिष्टाचार की कुछ बातें कर पुन: आने के वादे के साथ मैं अंचभित सा वहां से रवाना हुआ। रास्ते में सुनील के मुस्कुराते चेहरे, बात करने के अंदाज़ और आत्मविश्वास से भरे जीवन के बारे सोचते सोचते घर पहुंच गया। घर पहुंचते ही पत्नी को जब पूरी बात बताई तो वो भी सिहर उठी और बोली– हे भगवान, ऐसा कैसे हो सकता है ?

गोविन्दसिंह चौहान,
साहित्यकार भागावड़, भीम

जय बाबा री

जय बाबा री... इन पंक्तियों के लेखक के लिए उस आस्था, विश्वास या श्रद्धा की पूर्ण व्याख्या करना संभव नहीं है, जिसकी अनुभूति की लम्बी और गहन यात्रा से वह बचपन से गुजरा हुआ है। अपने शहर के सुप्रसिद्ध श्री द्वारकाधीश मंदिर की वे गलियां जो अब प्राइम रोड बन चुकी है, पर सुबह से शाम तक गुजरते भक्तों के रैले और उनके चेहरे की अलग अलग भाव भूमि के बनते बिगड़ते गणित को देखा भी है और प्रभु से उनके मिलन की उत्कण्ठा को अपनी पैनी नजर के तराजू से तौला भी है।

वर्षभर के उत्सव, पर्व, मनोरथ, झांकियों व आनन्दोल्लास के पलों के बीच ऐसे भक्तों का रैला जो न शहरी चकाचौंध से निजात और लूट सके तो लूट की अनायास घर कर गई। इच्छा के साथ वाला डिजाइनर धार्मिक पर्यटक है और न ही गांव की पृष्ठभूमि से आकर धर्म, संस्कृति के चमत्कारिक दृश्यों को देखकर ठगा सा रह जाने वालों दर्शक है। सावन की फुंहार, धरती पर पड़ते ही कभी नियोजित, कभी अनियोजित धुर मालवा, निमाड़, मेवाड़, बागड़, हाड़ौत, काठियावाड़, पंच महाल, गोडवाड़ और न जाने कहां कहां से निकल कर कभी अकेला, कभी अपने दोस्त भायलों, कभी बीवी, कभी बीवी बच्चों और कभी अपने गांव गुवाड़ के जत्थों के साथ निकल पड़ता है। दूर दराज से पैदल, जुगाड़, मोटरसाइकिल, साइकिल पर सवार होकर 'जय बाबा री...' जयकार के साथ रूणीचा के धणी रामा पीर के दरबार पर मत्था टेकने।

इन बावले भक्तों के माध्यम से बाबा के दर्शनों का ाभ दिलाते, चीखती, चिंघाड़ती और अपने पहुंचने का जश्न मनाते मनवाते इन जातरुओं के वाहनों के हॉर्न किसी ट्रैफिक रूल को नहीं मानते। इनकी साइकिलों पर ट्रक और बस का हॉर्न बजता देख और सुन लें, तो अचरज न करें। इनके दोपहिया वाहनों पर बाल बच्चों और महिलाओं की बिन्दास बैठक और घर गृहस्थी का सारा जुगाड़ एक मुश्त किसी उड़न खटौला का सा अहसास देता है। बाबा की पताकाओं से सजे इनके दोपहिया वाहन हो या ट्रॉली, ट्रैक्टर से बाहर लटकते पैरों और त्रिपाल के अन्दर, बाहर ठसे, फंसे बच्चों और बड़ों का रेवड़ ही सही, अभावों के बीच किसी मस्ती की पाठशाला में भोले विद्यार्थियों से कम नहीं लगते। क्या इनकी भोली आस्था तुलना आस्था के उन केन्द्रों से की जा सकती है, जहां जो जितना बड़ा मनोरथी, वह उतना ही बड़ा आस्थावान।

प्रभु के सुस्वादु भोग से सर्वथा अपारिचित मौसमी विक्रेताओं से मनमाने दाम पर खरीदे खांडचने चबाते ये जातरु धार्मिक, सांस्कृतिक पर्यटन की कौनसी परिभाषा के दायरे में आते हैं। नहीं मालूम ये एयर इंडिया के 'पधारो म्हारे देस' की मेहमान नवाजी के भी हकदार नहीं। क्योंकि मेहनत से कमाए दो पैसो को बाबा के नाम पर व्यय कर देने वाले इन भोले भक्तों को नसीब में सुविधाओं के नाम पर क्या मिलता है। सड़क किनारे धर्मशाला, होटलों के बाहर बारिश, ठंड या उमस के बीच मच्छर- मक्खियों के दंश को बाबा के विश्वास पर जी लेने वालों को जब बाल बच्चों, माताओं, बहनों के साथ रात के स्याह अंधेरों में सोते देखता हूं, तो मौलिक अधिकार, मानवाधिकार, महिला सुरक्षा, बाल सुरक्षा पर बड़ी बहस करने वाले सरकारी व सामाजिक स्वयंसेवी संगठनों के घड़ियाली आंसुओं पर हंसी आने लगती है।

इन सबके बीच अगर कोई सच्चा सेवी नजर आता है, तो वे रामरसोड़े, जो पलक पावड़े बिछाकर तैयार बैठे होते हैं। श्रद्धावनत थके, हारे पैदल, साइकिल व मोटरसाइकिल यात्रियों को तेल मालिश करते या मटकों के ठंडे पानी के छींटे चेहरे पर मार एक बार मंजीरे खड़ताल पर बाबा के प्रति भाव भरा आह्वान करने के बाद जब तरी में डूबी आलू की झोलदार सब्जी और कढ़ाई से नाचती, गाती, इतराती गरमागरम पुड़ियों के साथ खालिस घी में डूबे हलवे का आनन्द इन जातरुओं द्वारा लेते देखने में आता है, तो सच लोक नायक व देव प्रतिमाओं और उनके बीच के जुनून से बंधे इन सेवकों के चलने, रूकने और फिर चल पड़ने का अर्थ समझ आने लगता है।

डॉ. राकेश तैलंग
पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक
द्वारकेश मार्ग, कांकरोली
9460252308

मानवता की मिशाल : क्षुधा अमृत

वैष्णव जन तो तैने ही कहीये, जे पीर पराई जाणे रे,
पर दुखे उपकार करें, पर मन अभिमान न आणे रे।

इस भजन को सच्चे अर्थों में जिस टोली ने समझा, वो है क्षुधा अमृत।

ये नाम कई लोगों के लिए नया होगा, तो चलिए इस नए नाम के साथ आज सकारात्मकता की ओर बढ़ते हैं। मेरे पुराने कपड़े वितरित करने के कार्य में सहयोग के लिए **निखिल सहलोत** नाम से एक फोन आया थोड़ी बात के बाद कुछ दिनों बाद उनके पूरे ग्रुप से मुलाकात का अवसर मिला।

रात के कोई 8 बजे मिलना हुआ एवं बातों ही बातों में पता चला कि उन युवाओं ने उस दिन अपने स्तर पर जरूरतमंदों को भोजन वितरित करने का कार्य प्रारंभ किया था। इस अभियान का नाम था क्षुधा अमृत।

जी हां, शहर के 21 से 25 साल की उम्र के कोई दस बारह युवा इन दिनों एक अद्भुत मिसाल बनते हुए भूखे चेहरों पर अपनी चपाती, चावल, मिठाई के सहारे मुस्कान वितरित कर रहे हैं।

अगस्त से प्रारम्भ ये अभियान अपने तीन चरण पूर्ण करते हुए निर्धन, अस्पताल में आए मजबूर व बाहर से आये परीक्षार्थियों को समाहित करते हुए लगभग 300 लोगों तक पहुचने में सफल रहा है। इस दौरान इन सारे युवाओं ने जब केरल के हालात देखे तो ये वहां भी राजसमन्द के स्नेह को प्रसारित करने में जुट गए। जब हम सब केरल की आपदाओं पर तर्क- कुतर्क कर रहे थे, उस दौरान ये सभी 84 पार्सल केरल की गाड़ियों में रवाना कर रहे थे, जिनमें कपड़े, बिस्किट, साबुन, चाय व दवा इत्यादि शामिल थे।

यहां हम सबने सारी समस्याओं के लिए सत्ता व व्यवस्थाओं के लिए नेताओं को दोष देने की परम्परा बना रहे हैं, वहीं अपने राजसमन्द के इन युवाओं ने बताया कि ये देश सबका है और हम सबको अपने अपने सामर्थ्य एवं समयनुसार इसको बेहतर बनाना है।

जयवर्द्धन इस कॉलम के माध्यम से निखिल सहलोत, अविनाश दक, हर्षिल कावड़िया, श्रेयांक जैन, मनोज कोठारी, नितिन जैन, अभिषेक दक, हर्षित सांखला, चिरायु जैन, रणजीत धोका, आकाश सहलोत, मयंक जैन, नवीन एवं ऋषभ सहित सुधा अमृत की पूरी टीम को हृदय से साधुवाद अर्पित करते हुए विनम्र आग्रह करता है कि अपनी ये सेवा यात्रा सतत गतिशील रखें और इस युवा टीम से अन्य भी प्रेरणा लें।

जयवर्द्धन ने राजसमंद से रूबरू कराया

जयवर्द्धन पत्रिका पढ़कर काफी आनंद आया और एक बार तो लगा कि मैं राजसमंद के काफी समीप हूं। वास्तव में यह पत्रिका अपने आप में एक अनूठी शुरुआत है। इसमें स्थानीय खबरों का बेजोड़ मिश्रण रचा गया है। अगस्त माह का अंक शराबबंदी की सामाजिक समस्या की वास्तविकता को धरातल पर संकलित करता है। बहुत कुछ जानने व सीखने को मिला। काछबली-मंडावर में प्राप्त सफलता के बारे में विस्तृत खबर पढ़कर आत्मीय खुशी हुई। शराबबंदी के खिलाफ जारी लड़ाई में समाज के विभिन्न अंगों को एक साथ डटकर मुकाबला करना होगा। अन्य खबरों में चप्पा चप्पा चस्पा चस्पा लेख काफी रोचक लगा और यही वास्तविकता है कि आज हमारे चारों तरफ इसी तरह की अनेकों समस्याएं खड़ी है। वहीं आम नागरिक सरकार से हर चीज बदलने की अपेक्षा करता है, लेकिन इसके लिए स्वयं आम नागरिकों को आगे आकर अपनी आदतों को बदलकर शहर, देश और राज्य के लिए कुछ करना होगा। इस तरह के पोस्टर लगाने के लिए हमारे समाज के ही व्यवसाय गैर जिम्मेदाराना तरीके अपना रहे हैं। हमें व हमारी सोच को बदलना होगा। स्वच्छता अभियान भी इसी तरह का संदेश देता है कि बच्चे से लेकर बड़े तक हर किसी की यह जिम्मेदारी है कि हम अपने शहर को सुंदर व स्वच्छ बना सकें। इतिहास के बारे में दिवेर की जानकारी बहुत रोचक लगी। आशा है कि जयवर्द्धन पत्रिका के आगामी अंकों में राजसमंद जिले के स्वर्णिम इतिहास के बारे में नई पीढ़ी को शिक्षित करने का दौर जारी रहेगा।

शरद बोहरा,
राज्यावास वर्तमान सिंगापुर

अगस्त का अंक प्रेरणास्पद

जयवर्द्धन पत्रिका का अगस्त माह का अंक जो शराबबंदी पर आधारित था, आमजन के साथ खास तौर से भावी पीढ़ी के लिए बहुत ही रोचक व प्रेरणादायी था। शराब एक अभिशाप हैं। एक ऐसी बुराई हैं जो पूरा जीवन बर्बाद कर देती हैं। पत्रिका में सुन्दर लेख, कहानियां, कविताएं व पिकनिक वर्णन आदि का उत्कृष्ट सम्मिश्रण था। संबंधित फोटो व चित्र भी लाजवाब व व्यवस्थित थे। तीखी मिर्ची का कॉलम भी अच्छा लगा।

राजेन्द्र सनाढ्य 'राजन'
शिक्षक, साहित्यकार कोठारिया

मध्याह्न भोजन की सार्थकता

पत्रिका के अगस्त माह का अंक बहुत ही पसंद आया। विशेषकर **डॉ. राकेश तैलंग सर** का आलेख मध्यान्ह भोजन, जो विद्यालय में दिया जाता है। उसके बारे में वास्तविक व आंतरिक स्थिति को सामने लाकर हर किसी को अंदर तक झकझोर देने वाला रहा। शराबबंदी का काछबली व मंडावर पंचायतों की सरपंच द्वारा जो प्रयास, संघर्ष किया गया है, वह पहल प्रशंसनीय लगी। महिला होने के बावजूद दोनों सरपंचों ने बहुत ही जीवटता वाला काम ही नहीं, बल्कि परिणाम भी लाकर दिखाए।

भागीरथ रेगर, व्याख्याता राउमावि नमाणा

जयवर्द्धन मतलब समग्रता

पत्रिका का अगस्त अंक हर क्षेत्र के लेख, कहानी, कविता व खबरों से परिपूर्ण ही नहीं, बल्कि हर तरह के मुद्दे से समग्रता का अहसास कराया। शराब के विरूद्ध संघर्ष की कहानियां भी गांव के हालात को स्पष्ट बयां कर रही है। माटी का लाल कॉलम में **गौकुलानन्द जी तैलंग** द्वारा जगाई शिक्षा की अलख और उनके संघर्ष की कहानी आज की भावी पीढ़ी के लिए प्रेरक व प्रेरणास्पद है। पठनीय सामग्री से परिपूर्ण अंक था। हर मुद्दे पर सटीक व तथ्यात्मक रिपोर्टिंग रही।

गोविन्द सिंह चौहान
भागावड़, भीम मो. 9783207045

सामाजिक विसंगतियों पर प्रहार

सामाजिक विसंगतियों को समुदाय के सम्मुख रख कर समाधान की दिशा में कार्य योजना करने वाली जयवर्द्धन का हर अंक संग्रहणीय है। विशेषकर अगस्त के अंक ने तो समाज की आंखे खोल दी। शराब के दुष्परिणाम को बेहतर ढंग से प्रस्तुत किया है। वर्तमान के प्रत्येक परिवार की यह पीड़ा है, दर्द है। शायर **सूर्यप्रकाश दीक्षित** का आलेख बच्चे पी रहे दारू बेहतरीन चिंतन दे रहा है। मुखकथा संवेदनशील यथार्थ चित्रण कर रही है। **डॉ. राकेश तैलंग** के लेख में मध्यान्ह पोषाहार की उपयोगिता को स्पष्ट किया है। सनसनीखेज समाचारों की आपाधापी में साहित्य के लिए 4 पृष्ठ नियोजित करना साहित्य सेवा, निष्ठा एवं समर्पण का प्रतीक है। समुदाय से विलग होती मेवाड़ी भाषा के सरंक्षण के स्वरूप में एक कथा या कविता मेवाड़ी में देना मेवाड़ के लिए पुण्य भरा कार्य है।

नारायणसिंह राव 'निराकार'
सहायक परियोजना अधिकारी, सर्व शिक्षा अभियान
काव्य गोष्ठी मंच राजसमंद

Let Us Help Your Business
GROW
Advertise
With
Us!
AFFORDABLE, TARGETED, NOW!
अपने बिजनेस
को दें
बुलन्दियां
सस्ती दरों पर
जयवर्द्धन
पत्रिका में
विज्ञापन
प्रकाशित कराएं।
स्पेशल ऑफर
विज्ञापन साइज
5 X 8 CM
सिर्फ
₹1000/-
सम्पर्क
शक्ति एडवरटाइजिंग
C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली, जिला-राजसमंद, 9414239648, 9649813798
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

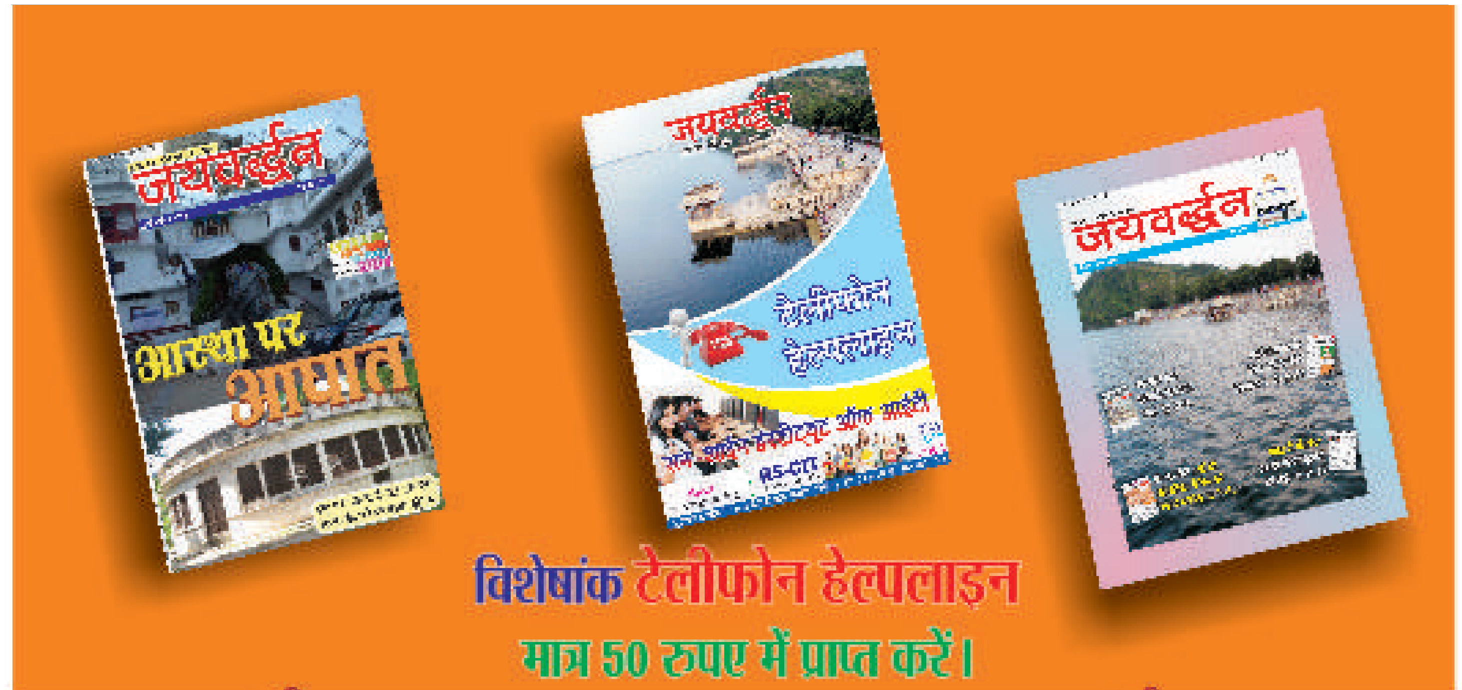

मासिक "जयवर्द्धन" पत्रिका के ग्राहक बनें और आकर्षक डिस्काउंट पाएं

नाम- श्री/श्रीमती...

पता .... राज्य ....

फोन (निवास) ....मोबाइल ....ई-मेल ....

कृपया **जयवर्द्धन** के नाम से रु ....का डी.डी या चैक नं. ....

तिथि .... प्राप्त करें।

बैंक का नाम ....

(राजसमंद जिले से बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू अधिक भेजें।)

अवधि	अंकों की संख्या	कवर मूल्य	बचत	सब्सक्रिप्शन दर
1 वर्ष	12	240	90	150 रुपए

विशेष छूट के साथ मासिक पत्रिका की वार्षिक बुकिंग मात्र 150 रुपए में

कृपया इस फार्म को भरकर डी.डी. या चैक के साथ हमें इस पते पर भेजें,
कार्यालय पता : C/O शक्ति स्पोर्ट्स, शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद (राजस्थान) मोबाईल 9414239648, 9950084705

नियम और शर्तें :

1. यह योजना केवल भारत में ही मान्य है।
2. विशेष पेशकश सीमित अवधि के लिए है।
3. राजसमन्द जिले के बाहर से भेजे गए चैक में कृपया 30/- रू. अधिक भेजें।
4. पत्रिका साधारण डाक द्वारा भेजी जाएगी तथा डाक गुम हो जाने पर जिम्मेदारी संस्थान की नहीं होगी। सूचना प्राप्त होने पर यदि अंक उपलब्ध रहता है तो पुन: निशुल्क प्रेषित कर दिया जाएगा।
5. पहले अंक को आप तक पहुंचने में एकाध सप्ताह लग सकता है।
6. कूरियर रजि.डाक से मंगवाने के लिए ग्राहक को कूरियर रजि. डाक खर्च अतिरिक्त वहन करना होगा।
7. सभी विवादों का न्याय क्षेत्र राजसमन्द न्यायालय के अधीन होगा।

चम्पो चापलूस

चम्पालाल सिनाजी रे मन्दर जातो गाइड पणो करतो। थोड़ा गणा पया हाते पड़ता, जो ठण्डाई पाणी छाणाता अखाड़े जाता। पान अरोगता ने अन्तर चोपड़ता, पचे बजार में वेपारी ने छोटा मोटा नेता रे हाते बैठता वाता फाकता। बजार में पटेलाई करता। अणी दुकान पे बेटा, वणी दुकान में चा पाणी पीदा, रूपाली रूपाली वातां करी ने दन खोड़वता। पया हांजे जेब में रेई जाता तो घरवाळी लेई लेती ने घर रो काम चलावती। जिन्दगी में वने भी घर हारू (पर्याप्त धन) पया नी हाते लागा। जणी में वा छोरी ने भणावती भी ही। छोरो छोटो हो, कणी दाण कोई वैष्णव मेरबान वेतो तो परसाद पाणी भी काम चलावा रो जरियो हो। यानि के कदी परसाद पाणी ती काम चालतो हो। चम्पा रो छोटो भाई परषोत्तम मास्टर हो, जो घरे कणी दाण भाभी रे खरचा पाणी देई देतो हो, ने भतीजी रे कोप्या–किताबा, फीस रो बन्दोबस्त करी देता हो। वन्डे भणावा में मदद पूरी करतो। क्यूके परस्यो मास्टर हो, छोरी वंडी मां री हालत देकी ने परेशान ही। पण मन लगाई ने भणती जण्यु परस्यो राजी रेतो के मू मेणत करी रियो हूं। पया लगाई रियो हूं। छोरी मारी वात राकी री है। परस्ये कदी वन्डा छोरा छोरी ने भतीजा भतीजी में फरक नी राक्यो, घर में सबु मोटी भाई चम्पा री छोरीस ही। ज्यू छोरी रो सकूल में नाम वेतो, ज्यु चम्पो वतो इतरतो मारी छोरी रे भणाई में खरचो वेई रियो है। मनका ने बजार में केतो फरतो, मनक पाचो चम्पा रो माजणो वगाड़ता। कारे छोरी रे किताबा–कोप्या, फीस परस्यो देवाड़े, थूं कई खरचो करें, तो जवाब जो हो के परस्यो मास्टर है, जो वने में हुपी राक्यो है। बाकी खरचा रा पया मूइस देई रियो हूं। मू वना भण्यो हूं। किताबा–कोप्या में वो हमजे, मनक सब हमझता। सब वाता हुणतो रेतो पण धन रो जायो परस्यो कदी भाई भाबी रे हामो नी बोलतो, वो वण्डो काम करतो रेतो। पण भाबी सब वात हमझती। कणी दाण काका भतीजी ने बजार में देकी लेतो तो खुद री ईज्जत रा कांकरा करावतो केतो के परस्या पया रो होच करे मती। अंडे चावे जो देवाड़जे। जदी के छोरी रे वाते कदी पावली खल्या मऊ नी काड़ी। खाली मनका रे हामे हमजणो वणतो, डींगा हाकतो। बराबर परस्या ने परेशान करतो के परस्यो मास्टर कई नी हमझे, ने खुद लग लग तो हाउकार वे। परस्या रो जीव मेई में उकळतो पण परस्यो मास्टर जो हो वन्डा तीरे शिक्षा ही अर शैतानी ही तो चम्पा कोड़े।

एक दन भाबी परस्या ने कियो काओ परषोत्तम जी जणी दाण वे जणी दाण भर्‌या बजार में आपरे भाई आपने अन्ट सन्ट के, आपने भुंडो नी लागे। परषोतम केवे भाबी मोटा भाई है, केता वेला। कणी ने कणी दन भगवान वणा ने सद्‌बुद्धि देला, जा वणा कोड़े नी है। मू कौका री भाळ में हूं, कणी दन मौको आवेला हाऊ जीमाडुला। मु जवाब नी देई सक्यो तो एक दन मारी भतीजी जवाब देला। टेम निकलतो गियो, छोरी हाऊ भणती री ने आगे बढ़बू कीदी।

जतरे चुनाव आई गिया। फाकू चम्पो छोटा मोटा नेता ने वेपार्‌या रे माता देतो जातो, लारे फरतो, फोकट रा चा पाणी पीतो। बजार में घूमतो ने गाड्‌या में पाचे बेटो रेतो। घरे लुगाई छोरा री कई खोज खबर नी ही। अस्या टेम में परस्यो एक दन भतीजी ने लेई ने बजार वेई ने जाई रियो हो, के चम्पा री नजर पड़ी। चम्पे कियो के परस्या कणी गुताड़ा में है। परस्ये कियो दादा मू छोरी रे जरूरी सामान लेवा ने जाई रियो हूं। काले छोरी ने भणवा ने बाने मेलणी है। कटे मेली रियो है। मने खबर नी है। पचे फीस रो कई वेला बाने फीस भी तो हजार बारा सौ रिप्या चावेला। परस्ये कियो दादा थोड़ो होस में आव छोरी नीट परीक्षा पास वेई गी है। बाने भणवा जाई री है। वटे अंडी फीस दो लाख रिप्या है, जो मैं भरी दीदी है। अबे अन्डे लेपटॉप चाई रियो है, जो अड़तीस हजार रिप्या है, जो लेवा ने जाई रियो हूं। थूं थारे अन्तर चोपड़ पटेलाई कर चुनाव री गाड़िया में पाचे बेटो फर। यो केईन परस्यो छोरी ने लेईन चालतो वण्यो।

अबे चम्पा रे थोड़ो मातो ठण्क्यो, पण चम्पो तो चम्पो है। मनका ने केवा लागो छोरी हाऊ भणीगी है। हाऊ ठकाणे हकपण करणो पड़ेला। खरचो हाऊ वेला। चम्पो मन्दर ती आवतोई ने हुदो बजार पटेलाई करवा पोची ग्यो। परस्ये अतरी गेरी वात कीदी तोई चम्पो संपट में नी आयो। धीरे धीरे दो तीन वर निकळी ग्या। छोरी भणी थकी वात छानी नी रे। मनक हकपण हान्दा हाऊ आया। चम्पा ती मल्या। चम्पे हगाजी ऊ वात करती टेम धापी ने अकल रो दिवालो काड़ी नाक्यो। कियो छोरी केट भणी थकी है। दहेज कतरो दोला। या वात हुणीन हगाजी रो मातो ठणक ग्यो। यो हुणताई न सेटजी बोल्या– चम्पा थोड़ी अकल राक, संपट ऊ वात कर। अन्तर रो पुम्बो कम चोपड़, मातो ठकाणे रेवे। दहेज तो थने देणो है। पचे सेटजी हगाजी ने कियो आप परषोतम ऊ वात करो यो चम्पो तो पूरो दादा रंगो है।

हगाजी परषोतम तीरे गिया ने वात कीदी। आखिर परषोतम शिक्षित हो, वणी हगाजी री हाऊ आव भगत कीदी। बालक री जाणकारी लीदी। बालक सीए भण्यो थको है। हगाजी परषोतम ने पूछो बच्ची कस्या केट री भणाई करी री है। परषोतम ने हमझाता देर नी लागी या चम्पा दादा री भोलपण है। हगाजी ने परषोतम हमजाई दीदा कि बच्ची नीट री परीक्षा पास वेईगी है। डॉक्टरी करी री है, यो वंडे लास्ट साल है।

हगाजी पूरो मन वणाई लीदो, हगाजी परषोतम ने भाभी मली ने हगाई तै करी काड़ी। अणी साल छोरी भी डॉक्टर वेईगी। छोरी ने मेडिकल कॉलेज में जणी दाण डिग्री मली, वणी दाण चम्पो भाभी ने परस्यो सब गिया। छोरी ने कॉलेज रा डीन साहब पूछयो आप डिग्री कंडे हाथुं लोला। चम्पो गणो ऊंचो नीचो वियो, हाऊ खेखरा कीदा, पण छोरी री आंख्या में आऊ आई ग्या। छोरी कियो परषोतम काकासा रा हाथ ऊ। पण परषोतम ने चम्पा दादा ने जावा रो इशारो कीदो, पण चम्पे आज ना कीदी। कियो रे परस्या आज रा दन रे वातरे थें गणी मेणत कीदी है। थूं जा, परषोतम जाई ने छोरीने डिग्री देवाड़ी। गला में स्टेथ, स्कोप नाकी ने परस्यो छोरी ने लेई आयो। जिन्दगी में पेली दाण चम्पा ने छोरी अर परस्या ऊ दरप लागी।

वणी दाण परस्या री छाती चौड़ी वेईगी ने भाबी ने कियो देको भाबी आज मारी छोरी दादा ने जवाब देई दीदो है। अबे छोरी रो ब्याव तै वेई ग्यो। अबे परस्यो ने भाबी छोरी रे ब्याव रो सामान लावा लागा, पण चम्पो रे वेई गल्ली न वेई डंडक्या। परस्यो ब्याव रो राशन खरीदी रियो हो, चम्पो पाचो बजार में मल्यो। चम्पो बोल्यो– परस्या पया चावे तो लेई लीजे, जदी परस्ये आज भाई री इज्जत नी राकी ने कियो के लाव कतरा रिप्या देई रियो है। चम्पे खल्या मऊ डेढ़ सौ रिप्या काड़ीन देई दीदा। परस्ये कियो के दादा अतरा रिप्या कटऊ लायो। चम्पो बोल्यो छोरी रो ब्याव है, रिप्या तीरे राकणा पड़े।

ब्याव री सब तैयारियां वेईगी। वरात स्वागत, फेरा, नाश्ता, जीमण और छोरी ठाठऊ पनी गी। परस्ये अर भाबी वरात री खूब आवभगत कीदी। वरातिया सब राजी वेई ग्या। मांडा वाळा सब राजी हा। खुशी री वात ही कि छोरा छोरी दोई जोगा हा। वरात ने हीक देती टेम छोरी परस्या रे खूब लपी लपी न रोई री ही। चम्पे वटेई वनी हमजणाई वताई दीदी अर विंद रे कान में जाई बोल्यो के म्हारी छोरी रोई गणी री है। अबाणु थूं जा, दो तीन दन केड़े पाचो आई जाजे। पछे छोरी ने मेली देवा....।

सुदर्शन श्रीमाली, मजा
द्वितीय वर्ष वाणिज्य बीएन कॉलेज उदयपुर
मो. 77420-76269

बनो सच की ताकत
जयवर्द्धन पत्रिका
आपकी खबर
अब आपकी जुबानी..
अब आप
भी भेज सकते हैं
खबर

आपके शहर व गांव से जुड़ी
मूलभुत समस्या, नवाचार,
आयोजन, मुद्दे, लेख,
चुटकले, कहानी, कविता
हमें भेजे
E-Mail : jaivardhanpatrika@gmail.com

कवर्धा (छत्तीसगढ़)

मादक द्रव्य व्यसन के मनोसामाजिक एवं आर्थिक परिपेक्ष्य अंतर्गत राष्ट्रीय संगोष्ठी 12 एवं 13 फरवरी 2018 दो दिन के समारोह में आचार्यपंथ श्री गृन्ध मुनि नाम साहब शासकीय स्नातकोतर महाविद्यालय, कवर्धा में 'रिसोर्स परसन' के रूप में जाना हुआ। हमें ऑनलाइन ही निमंत्रण मिला। मेरी नशामुक्ति यात्रा दर्शनयात्रा भी बन गई।

हम गांधीनगर से अहमदाबाद बस से गए। अहमदाबाद से रेल यात्रा शुरु हुई। भरूच और सूरत से मुसाफिरों का जमेला हमारे रिजर्वेशन कोच में चढ़ गया। बाथरूम की ओर जाने के लिए कूदते कूदते पुरुष तो जा सकते थे, लेकिन महिलाओं की परिस्थिति कठिन थी। हम रायपुर पहुंचे तब बारिश शुरु हो गई थी। भीगते भीगते हम फाफड़ी बाजार कवर्धा जाने के लिए बस अड्डा तक पहुंचे। बस 15 मिनट में मिल गई। 5.30 बजे शाम को बस चली ढाई घंटे का रास्ता साढ़े चार घंटा लम्बा हो गया। हम 9.30 को बस अड्डा कवर्धा पहुंचे। तब भी हल्की- हल्की सी बारिश होती थी। बस में ही आरएसएस के संघ शिष्य और संघ गुरु की पहचान हो गई थी। हमारा बेग वही छात्रों ने पकड़ लिया। हमें अमित गेस्ट हाउस तक छोड़ गए।

हमारे स्वागत के लिए एक प्रोफेसर को काम सौंपा गया था, लेकिन फोन करने के बावजूद उनकी भेंट न हुई। वाही आरएसएस वाले हमारी मदद में आ गए। दूसरे दिन कॉलेज छात्रों के साथ वही आरएसएस शिविरार्थी भी मेरी नशामुक्ति की बातें सुनने आ पहुंचे थे। हमें सभारंभ में अतिथि की जगह पर देखकर उन्हें बहुत खुशी हुई। हमें भी खुशी थी, क्योंकि गुजरात में स्कूल एवं कॉलेजो में व्यसन मुक्ति कार्यक्रम 300 से अधिक किए थे, लेकिन कोई दूसरे राज्य की महाविद्यालय हमें 'रिसोर्स पर्सन' के रुप में आमंत्रित करें, वो मेरे लिए जीवन की पहली अनमोल घटना थी।

विद्यार्थिओं को नशा की बंदी से जागृत रहने को हमारी मार्गदर्शिका कॉलेज के छात्रों को तो पसंद आई, लेकिन सभारंभ में उपस्थित सभी वक्ताओं को और महाविद्यालय के राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजकों को भी बहुत पसंद आई।

हमें इतने दूर जाकर कोई आर्थिक लाभ नहीं मिलने वाला था। फिर भी हम कष्ट सहकर रेल और बस से सफर करके कवर्धा जाने के लिए खुशी इसलिए महसूस करते थे कि हमारा नशामुक्ति का ज्ञान गुजरात से बाहर अन्य प्रदेशों में पहुंचे और अन्य लाभान्वित हो। इसी ख्याल से हम वहां 1300 किमी. दूर बारिश में भीगते भीगते पहुंचे थे।

अब समारोह पूरा होने के दूसरे दिन हम छतीसगढ़ के प्राचीन पर्यटन स्थल 18 किमी. दूर बस से जा पहुंचे। मेरे साथ मेरा मित्र मनोजकुमार, गवाडवी (पंजाब) नशा की दशा विषय में अपनी बाते पहुंचाने आए थे। वो भी मेरे साथ थे। मेरी धर्मपत्नी पार्वती बहन भी साथ आई थी।

भोरमदेव जाते समय रास्ते में दोनों किनारे स्वच्छता अभियान के सूत्र देखने को मिले। स्वच्छता भी देखने को मिली। रास्ते में राजानवा गांव आया। चारों ओर हरे भरे दिख रहे थे। कहीं बैल नहीं नजर आए। ट्रेक्टर से ही किसान खेती कर रहे थे। आजकल परिश्रम करना किसी को पसंद नहीं है। इसलिए बैल से खेती नहीं, लेकिन आधुनिक साधन से खेती करते देखा।

जाते समय लायन उद्यान भी देखने को मिला। हमने तो असली लायन की बजाय नकली लायन के साथ अपनी तस्वीर भी खिंची और सोशल मीडिया पर रख दी। भोरमदेव पहुंचने से पहले 'राधामाधव सेवा सदन' गौ सेवा केंद्र देखने को मिला। भोरमदेव को अपना खजुराहो के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर के सामने पहाड़ दिखे। एक तालाब भी देखा। उसमें नाव भी चल रही थी। पर्यटकों के लिए आनंद का साधन था। वृक्ष होने से सुंदर दिख रहा था। तालाब के सामने किनारे शिवजी की बड़ी मूर्ति दिख रही थी। हमें शिवजी के दर्शन और भोरमदेव देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

वहां पुरातत्व विभाग का म्युज़ियम देखा। म्युजियम में खड्गधारी योद्धाओं की पत्थर की मूर्तियां 15वीं सदी की देखने को मिली। उमा महेश की मूर्ति 13वीं सदी की थी। म्युजियम का दरवाजा नक्काशी काम वाला था। सूर्यदेव की खंडित मूर्ति 15वीं सदी की थी। नंदी की मूर्ति 13वीं सदी की थी। लक्ष्मीनारायण की 14वीं सदी की देखने को मिली। अंजली आराधिका की मूर्ति 12वीं सदी की थी। महीषासुर गणेश की 13वीं सदी की मूर्ति थी।

भोरमदेव मंदिर का निर्माण 12वीं सदी में हुआ था। मंदिर परिसर में भोरमदेव मंदिर छपरी जिल्ला कबीर धाम, कवर्धा, सांस्कृतिक एवं पुरातन विभाग छत्तीसगढ़... आदि विवरण का बोर्ड था। मंदिर के बाहर दूसरा बोर्ड लगा था, जिसमें हिंदी और इंग्लिश में मंदिर का वर्णन अंकित है।

नाग राजाओं के समय 11वीं उतराती ई.सन के पूर्वार्ध के प्रस्तर निर्मित यह शिव मंदिर दक्षिण कौशल विकास का क्लासिक प्रतीक है। यह मंदिर गोंडो के उपास्य भोरमदेव के नाम से प्रसिद्ध है।

यह मंदिर तल विन्यास में सप्तरथ चतुरंग एवं उर्ध्व विन्यास सप्त भूमि शैली का है। तल विन्यास में गर्भ गृह अंतराल अलंकृत स्तंभों से युक्त वर्गाकार मंडप एवं तीन ओर प्रवेश के लिए अर्ध मंडप निर्मित है। उर्ध्व विन्यास में अधिस्तात जंघा एवं शिखर मंदिर के प्रमुख अंग है।

मंदिर के जंघा को तीन पंक्तिओं में विभिन्न देवी देवताओं, कृष्ण, भीलों, नायक नायिकों, अष्ट दिग्पालों, युद्ध एवं मैथुन दृश्यों से अलंकृत किया गया है। मंदिर के भद्र रथ पर उकेरी प्रतिमाएं विशेष महत्व की है, जिसमें पुरान्तक वध, चामुंडा महिषासुर मर्दिनी एवं नृत्य गणपति की प्रतिमाएं विशेष कलात्मक और आकर्षक है। शिखर मजरियों से अलंकृत है। इस मंदिर की कला में तांत्रिक प्रभाव परिलक्षित है। विभिन्न मैथुन दृश्यों के अंकन एवं कलात्मक आंग्य के कारण इस मंदिर को छत्तीसगढ़ की खजुराहो की संज्ञा दी जाती है।

मंदिर के सामने लक्ष्मण झुला है। मंदिर की चारों ओर दीवार है। दीवारों के ऊपर में लोहे की कलात्मक जाली लगाई गई है। मंदिर एकदम साफ़ सुथरा और सुंदर दिखता था। महाशिवरात्रि के पर्व के कारण दर्शनार्थियों की भीड़ जमा हुई थी। वहां के स्थानिक जानकारी मिली कि होली के बाद तेरस को मेला लगता है। गावों में भजन मंडलियां नाटक करती है। रामलीला का नाट्य होता है। 11 दिसम्बर 2013 तेरस को होली के बाद ये पर्व चलता है।

भोरमदेव के रस्ते पर एक राधास्वामी सत्संग न्यास है। यहां रोड मार्ग पर लंगूर झुण्ड दिखाई दिया। बरगोडी गांव में न्याय स्थित है। एक आरके रिसोर्ट भी है। रोड से आधा किमी. दूरी पर मंडवा महल है। ये एक पर्यटन स्थल है। विश्राम गृह भी यहां आया हुआ है। मंदिर के नीचे की ओर एक सुंदर बाग है। बाग़ के दरवाजे कलात्मक है, जहां से छपरी गांव 2 किमी. की दूरी पर है। मंडवा महल छपरी गांव जिल्ला कबीरधाम छत्तीसगढ़ में है। भोरमदेव से नागपुर 343 किमी. पंचमढ़ी 492 और बलाघाट 153 किमी. कांटा 95 किमी. और भोपाल 509 किमी. की दूरी पर है। जबलपुर 221 किमी. और कवर्धा 18 किमी. भोरमदेव से दूरी पर है, जो एक पर्यटन स्थल है। सदियों पुराना मंदिर है। ये सुंदर और सदियों पुराना होने से लोग दर्शन करने एवं आनंद के लिए बच्चों के साथ यहां आते है।

यहां पुरातत्व विभाग के म्युजियम में 12वीं सदी से लेकर 15वीं सदी की पाषाण की मूर्तियां है। सच में ये एक सुंदर पर्यटन स्थल है। वहां जाने से मन को शांति मिलती है। भोरमदेव मंदिर जाते समय रोड के किनारे बसे कई गांव देखने को मिलते हैं। गांव के मकान ठीकरी से ढके हुए है। कई जगह बांस से बने हुए मकान है, जहां आरसीसी के पक्के मकान बहुत कम है। भोरमदेव पहुंचने का रास्ता अच्छा है। यह स्थल एक बार जरुर देखने लायक है।

गुलाबचंद एन. पटेल
कवि, लेखक व
सेवानिवृत कार्यालय अधीक्षक शिक्षा विभाग
नशा मुक्ति अभियान प्रणेता, गुजरात

कांकरोली की झांकी

सन् 1959 में लिखी कविता

कांकरोली मशहूर भारत में, जाने सब इन्सान।
हमारा प्यारा राजस्थान, हमारा प्यारा राजस्थान।।
ऊंचे ऊंचे महल ये दिखते, सब जनता के दिल है ललचते।
बड़े- बड़े ये पहाड़ सुहाते, दूर-दूर से दर्शक आते।।
झरने जैसी गौमती करती, राजसमंद से प्रस्थान।
हमारा प्यारा राजस्थान, हमारा प्यारा राजस्थान।।
चौपाटी पर हम सब जाए, चहल-चहल का लाभ उठाए।
व्यापारी सब मन हर्षाएं, उन्नति की सब आस लगाए।।
सुन्दर रचना देख नगर की, भूले सब नर भान।
हमारा प्यारा राजस्थान, हमारा प्यारा राजस्थान।।
जलचक्की पर मित्रों आना, बड़ा आम का वृक्ष सुहाना।
शीतल छायादार ठिकाना, मोटर बस का आना जाना।।
काली नागिन जैसी दिखती, डमर रोड महान।
हमारा प्यारा राजस्थान, हमारा प्यारा राजस्थान।।
द्वारकाधीश का मन्दिर सुन्दर, कृष्ण चन्द्र की मुरत अन्दर।
मन्दिर-मस्जिद स्थानक सारे, शोभित है सब न्यारे- न्यारे।।
गुप्तेश्वर के मन्दिर में, शिव बैठे धर कर ध्यान।
हमारा प्यारा राजस्थान, हमारा प्यारा राजस्थान।
राजसमंद की महिमा न्यारी, तैर के करते तैराक सवारी।
इस माटी पर जाऊं बलिहारी, जिसने मेरी देह सवारी।।
कांकरोली की कथा सुनाकर कहता अफजल खान।
जय-जय हो हिन्दुस्तान, हमारा प्यारा राजस्थान।।

अफजल खां 'अफजल'
जलचक्की, सलूस रोड कांकरोली

सावण री तीज

पियुजी परदेसां गया, बणी अचानक आए।
सावणिया री तीज आई, दिल ने कुण समझाए।।
बादलियो गहरो छायो, पण कोने आई बरसात।
हिवड़ा री फसलां सुखण लागी, अब तो आवो नाथ।।
गौरी उभी गोखड़े, कर सोला सिणगार।
सावणिया री तीज है, अब निरखेला भरतार।।
साजन बीन सावण नहीं, सावन बीन प्रीत।
प्रीतम थारी याद में, मैं भूल गई सब गीत।।
सावणियो प्यारो घणों, मन में हरख अपार।
कद आसी मारो बादिलो, कर कर हारी सिणगार।।
जेठ, असाढ़ बीत गया, बाट जोवता पंथ।
सावणिया री तीज आई, अब तो आवो कंथ।।
बैठी गोखड़े कामणी, आंसुड़ा ढलकाए।
प्रीतम थारी प्रीत बिना, सावण ऐलो जाए।।
सावण आयो है सखी, हीवड़े हरख अपार।
जोबणियो हिलोरा मारे, सायबो समदा पार।।
सावण सुखो है सखी, किदो काई जाए।
इन्दर राजा कोपीयो, साजन कैयां आए।।

बख्तावरसिंह चुंडावत
आमेट, राजसमंद 94132-87301

जब बचपन को चोट लगी

जिस स्कूल की छत के नीचे
बैठ के खींची पहली रेखा
आज उसी स्कूल की छत पर
बुलडोजर को चलते देखा
जहां शारदे के मन्दिर में
दीप ज्ञान का जलते देखा
आज उसी पावन मन्दिर को
फिर मिट्टी में मिलते देखा
रोज बनाता फिरता हूं मैं
ऊंचे ऊंचे भवन अनोखे
बड़े बड़े शहरों में जाकर
बड़ी इमारत बड़े झरोखे
मगर आज कमजोर हो गई
खुद की मंजिल की बुनियाद
देख टूटता स्कूल मेरा
बिलख उठी बचपन की याद
याद आ गए सारे गुरूजन
जिनका गुजरा यहां पर जीवन
जिनकी शिक्षा के फूलों से
महका करता था ये मधुबन
सीता, गीता और जसोदा
मधु बहन जी जैसी बातें
यमुना शंकर, सरवर खां जी
मदनपुरी जी की वो लातें
बापना साब के मीठे बोल
इन्दरजी की गेंद और गोल
मन्नु भाई का संगीत
उमाशंकर जी के गीत
पाराशर में प्यार छिपा था
ममता और दुलार छिपा था
मात पिता के मन के जैसा
गुरूओं का सम्मान छिपा था
आज वही सम्मान भी रोता
मन का स्वाभिमान भी रोता
देख टूटते स्कूल की छत
बचपन का वो ज्ञान भी रोता।
क्या ऐसी लाचारी आई
जो स्कूल भी बेच दी भाई
क्यों दौलत की अंधी दौड़ मे
मन्दिर की भी बोली लगाई
अगर कमी होती तो कहते
पहली रोटी तुमको देते
कर्ज है मिट्टी का हम पर भी
फर्ज निभाकर पूरा करते
रोती ये स्कूल की गरीमा
रोते उसके रत्न ये सारे
विफल हो गए शंभू दादा
ईश्वर विनोद के प्रयत्न सारे
दर्द झलकता गौतम जैसा
झांक के जब इस मन में देखा
स्कूल के उस ब्लेक बोर्ड को
जब कबाड़ में बिकते देखा
समय की उस टनटन घंटी को
भंगार भाव से तौलते देखा
पानी पीने की टंकी को
जब पानी में घुलते देखा
फटी फटी थी टाट पट्टियों
फिर भी काम आ जाती थी
सात सात एक एक पर बैठते
वो सब को पार लगाती थी
आज उन्हीं दरियों को मैने
चिथड़े चिथड़े होते देखा
आंखो मे आँसू भर भर कर
भवन को मैंने गिरते देखा
जिस स्कूल की छत के नीचे
बैठ के खींची पहली रेखा
जब अपने स्कूल की छत पर
बुलडोजर को चढ़ते देखा

प्रमोद सनाढ्य 'प्रमोद'
राजसमंद,
9414232515

लिखावट

हृदय की मृदुलता से भावों की झिरमिर झरनों की
कल कल लिख लेता हूं।
प्रातः की संध्या से उषा की लालिमा के
रंग लिख लेता हूं।
दिन की धूप से भंवरो के रस की
मिठास लिख लेता हूं।
सरसों के खेत से पुष्पों की सुगंध में किसान का
पसीना लिख लेता हूं।
सांयकाल में ढलती शाम में पक्षियों का
कोलाहल लिख लेता हूं।
वन की गहनता से जीवो के शोर से बारिश की
बौछार लिख लेता हूं।
आम की छाया से प्रेमिका के हृदय की
प्रेम व्यथा लिख लेता हूं।
वीरों की भूमि से वीरता के बलिदान के
गान लिख लेता हूं ।
प्रेम के नीर से दया करुणा की
भक्ति का रस लिख लेता हूं।
भरत की वीरता से भारत की शौर्यता के
हिन्दू लिख लेता हूं।
मैं भावों के रस में एक नाम प्रेम नीर के
नए उज्वल हिन्दू राज लिख देता हूं।

कवि पंडित विष्णुकीर्ति 'कश्यप'
विकास आमेटा, राजसमंद

भगवान ऊं मंगतो कांई कांई मांगे

ऐक गाम में सेठ मक्खीचूस रेवतो। वणीरै घी, तेल रौ थोकबंद धंधों हो। कदी कबार घी रा डब्बा में ऊंदरो मर जावतो तो वो छाने रौ छाने वीं मर्‌या ऊंदरा ने नीचोड़ में फेंक देतो, तेल में माखी पड़ जावती तो वीने मुंडा सूं चूस अर बारे फेंक देतो। गाम रा मनख वीने मक्खी चूस रा नामऊं जाणवा लागा। मक्खीचूस गाम रा मन्दर में नत दरसण करवा जातो अर भगवानऊं ऐक ही बात री अरजी करतो। हे! भगवान् भले म्हूं मर जाऊं पण म्हारे घरा लछमी रौ वासो रै।

ऐक दन लछमी जी वणी री भावना समझीन वींरै घरां पावणी वी। लछमीजी बोल्या– सेठ आज थांरा अठेई रेऊंला अर सवेरे म्हारा घरां परा जाऊंली। सेठ वीने पूछ्यो– 'बाई थूं कूण है! म्हारै अठै कीतर आई ? ', लछमी बोली– 'म्हूं लछमी हूं अर म्हनै भगवान थारी भक्ति अर मांग रै कारण थारे कने भेजी है।' सेठ बोल्यो– जद थूं लछमी ही है तो पाछी क्यूं जावै, म्हें तो हमेशा म्हारै घरां रहवा रै वासते मांगी। लछमी बोली– देख म्हूं ऐक सरत पै रै सकूं हूं। जद कोई म्हनै वचना में बांध ले तो म्हूं कठेई नी जाऊं।

सेठ तुरत फुरत बोल्यो– है लछमी मां! म्हूं सवेरे वणज करवा दूजे गाम जाई रीयो हूं। पाछो जतरै नी आऊं थूं कठेई मत जाजे। लछमीजी ने वचना में बांध सेठ पास में ऐक कुड़ो हो, वणी में जाई पड़ियो अर मर गीयो।

वनी आत्मा नै लेवां यमराज आया अर बोल्या– सेठ बोलो, थांने स्वर्ग में चालणों है क नरक में ? सेठ बोल्यो म्हनै आप वणी ठोड़ ले चालो, जठे दो पीया रौ लाभ व्हे।

ऐक मंगतो रोज भगवान रा दरसण करतो अर केतो। हे भगवान! म्हूं मर जाऊं तोई म्हनै थारो प्रसाद खवातो रीजे। दर पूरा कर वो मर ग्यो तो भगवान वणी नै परसादी भण्डार रौ मकड़ो वणायो। वो मकोड़ा री जूण में परसाद खातो रेवतो अर मस्त पड्यो रेतो।

ऐक लोभी रोज-रोज मंदर जाय न आंखां बंद करीन अरज करतो। हे भगवान! म्हनै अस्यो वरदान दीजे क म्हूं अगला जनम लोगां सू पीया लेतो ई लेतो रैऊं अर कोई म्हारा सूं नी मांगै। भगवान वीनै आगला जनम में मंगतो वणाई दीदो। ऐ चौराहे पै कटोरो लेर मांगवा वालो वणाई दीदो। जो आवे जो वने देवे पण, कोई वणी सुं मांग नी सके। लोभ ने थोब नी। ऐक मंगतो नत दरसण में भगवान ने विनती करतो– हे मालक! म्हनै आगलो जनम अस्यो दीजै क लोग काम करें अर पैस्या म्हनै मले। भगवान रै अठे देर है, पण अंधेर नी। आगला जनम में वीने नगर रा शौचालय रौ द्वारपाल वणाई न बैठा दीदो। अबे वठे जो भी जाजरू करवा आवे, वे वीने पीया देन जावे। जाजरू जावा रौ काम करवा वालो दूजा नै पीया देन जावै अर सफाईकर्मी बैठो बैठो कमाई करें।

आप भगवान सूं जो भी मांगोगा, भगवान देगा। अबै आपने यो तै करणो है क आप कांई मांगोला ?

फतहलाल गुर्जर 'अनोखा'
जाट गली, कांकरोली
मो. 99286-25757

आवश्यकता

मार्केटिंग और रिपोर्टिंग के लिए

पार्टटाइम/फुल टाइम ऊर्जावान युवकों की

जयवर्द्धन मासिक पत्रिका : संपर्क 94142-39648

कृषि संसार

परिपूर्ण कृषि किसान सेवा केन्द्र

उत्तम क्वालिटी के खाद बीज व दवाइयां होलसेल रेट पर उपलब्ध हैं।

बेट्री संचालित
स्प्रे मशीन उपलब्ध

प्रवीण बोहरा
9414825827, 9680122287

अरविन्द बोहरा
9461658497

बस स्टैंड राज्यावास जिला-राजसमंद

उदयपुर, जयपुर, जोधपुर क्यों आपके शहर में सर्वश्रेष्ठ मंच | राजसमन्द में पहली बार सर्वश्रेष्ठ फैकल्टी एक ही मंच पर

संकल्प कोचिंग क्लासेज

रेनबो कलर लेब, छतरियों के पास, कांकरोली

:: संकल्प टीम ::

रिजनिंग - राकेश चौधरी, जितेन्द्र मीणा सर, जयपुर
शिक्षा मनोविज्ञान - सुरेन्द्र सांगवान सर, D.K. सिंघल
राजनीति विज्ञान - ओ.पी. सर, (संरक्षक), सुमेर सर
मैथ- जितेन्द्रजी, जयनारायणजी, संस्कृत - राजौरियाजी
हिन्दी - महेन्द्रजी झांझड़िया, श्रीमाली सर, उदयपुर

राजस्थान की कहानी - एस.एस. बैंसला की जुबानी
इतिहास- दीपकजी करोल, प्रदीप सर
साइंस - राजेन्द्रजी सोढ़ा सर, (गंगानगर)
अंग्रेजी - नन्दवानाजी, रेखाजी चावला
भूगोल - राजेन्द्र राठौड़ सर उदयपुर, अनिल दुल्लड़ सर

रतन सर-निदेशक

सभी प्रकार के कॉम्पिटीशन की तैयारी करवाई जाती हैं।

संरक्षक - O.P. सर मो. 9929728005, 8769820124, 9116987112

महादेव
एन्टरप्राईजेज & मोबाईल पॉइंट्स
हमारे यहां पर सभी प्रकार के इलेक्ट्रोनिक आइटम एवं
मोबाईल रिपेयरिंग, रिचार्ज,
नए व पुराने मोबाईल खरीदे एवं बेचे जाते हैं।
Hemant -Mob. 9784605193
दुकान नम्बर 14, बस स्टैंड, राज्यावास, जिला-राजसमंद

श्री लोकनाथ
मेडिकल स्टोर
अंग्रेजी एव आयुर्वेदिक दवाओं के विक्रेता
24 घंटे सेवा उपलब्ध
प्रो. समीर सरकार - 9950061990
गटालिया श्याम नगर, राज्यावास, जिला-राजसमंद

राधेकृष्णा ट्यूरिस्ट
आरटिगा, टवेरा, स्वीफ्ट डिजाईर
आदि किराये पर उपलब्ध हैं।
टेक्सी किराये के लिए सम्पर्क करें
प्रकाशचन्द्र कुमावत- 9587804581

जय भेरू भवानी जनरल स्टोर
हमारे यहां सभी
प्रकार की जनरल सामग्री उपलब्ध हैं।
स्कूल स्टेशनरी, बेग, शूज
प्रकाशचन्द्र कुमावत- 9587804581
बस स्टैंड, सहकारी समिति के पीछे, राज्यावास, जिला-राजसमंद

सांवरिया ट्रेडिंग कम्पनी
सांवरिया वस्त्रालय

S.D. Jaiswal-9414621877

Our Facilities

● गिफ्ट स्टोर ● बुक स्टोर ● स्पोर्ट्स ● कॉस्मेटिक स्टोर
● मेडिकल स्टोर ● ब्रोकरेज ● कन्स्ट्रक्शन ● जनरल स्टोर

जायसवाल भवन, बस स्टैंड, राज्यावास, जिला-राजसमंद Email -shambudaya80@gmail.com

मामा किराणा & जनरल स्टोर

पुष्कर पूर्बिया

बस स्टैंड के पास, राज्यावास, जिला-राजसमंद Mob. 9950691792

वैभव क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड, राजसमंद

पंजीयन संख्या : 759YS

-: हमारी शाखाए :-

● कांकरोली ● रेलमगरा ● नाथद्वारा

हेड ऑफिस :- 50 फीट रोड, टी.वी.एस. चौराहा, होटल स्वागत के पास, कांकरोली
जिला-राजसमंद 313324 सम्पर्क :- 02952-220612, 9414171612

शक्ति जनरल स्टोर
पंजाब नेशनल बैंक के सामने, स्टेशन रोड, कांकरोली (राज.)
02952-230810, 231810, 9413955210, 9460700467
हमारे यहां सभी तरह की स्टेशनरी सीबीएसई
व आरबीएसई की किताबें,
शक्ति कॉपियां एवं जनरल सामग्री व होजरी उपलब्ध हैं।
-: सहयोगी फर्म :-
शक्ति एजेंसीज
होलसेल स्टेशनर्स
शास्त्री मार्केट, कांकरोली (राजसमंद)
शक्ति उद्योग
शक्ति कॉपी, रजिस्टर के निर्माता
स्वास्तिक सिनेमा के पास, कांकरोली
अंकुर डेंटल क्लिनिक
डॉ. के.के. बोहरा -दंत चिकित्सक
स्वास्तिक सिनेमा के पास, कांकरोली

सविता इंटरनेशनल सैकण्डरी स्कूल, राज्यावास
SAVITA
INTERNATIONAL SCHOOL
गटालिया श्याम नगर, रेलमगरा रोड, राज्यावास (राजसमंद)
कक्षा नर्सरी से दसवीं तक अंग्रेजी माध्यम
अंग्रेजी व हिन्दी माध्यम
कक्षा नर्सरी से
आठवीं तक
हिन्दी माध्यम
SAVITA INTERNATIONAL
SCHOOL
विशेषताएं :-
● गुणवत्ता युक्त पाठ्यक्रम
● बहु-प्रतिभाशाली अध्यापक/
अध्यापिकाओं द्वारा अध्यापन।
● सी.सी. टीवी कवरेज युक्त विद्यालय।
● जीपीएस और सीसीटीवी युक्त स्कूल बसें।
● स्मार्ट क्लासेस
● शनिवार बैग रहित
● बहु-सांस्कृतिक सीखने का वातावरण
● नियमित गतिविधियां ● खेल सुविधाएं।
● शैक्षणिक ग्रीष्म कालीन शिविर
अधिक जानकारी के लिए विद्यालय प्रशासन से सम्पर्क करें।
NARESH TELI
GRADE - A+
PRATIBHA SHARMA
GRADE - A+
MAMTA VAISHNAV
GRADE - A+
MAHESH TELI
GRADE - A+
Call 9929506990, 8875171570
RTE के तहत नर्सरी कक्षा में 25% बच्चों का प्रवेश निःशुल्क

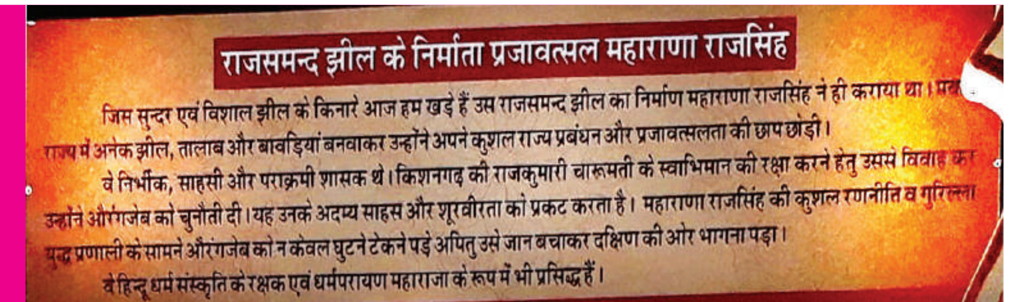

राजसमंद झील किनारे नौचोकी पर महाराणा राजसिंह पेनोरमा

राजसमंद के इतिहास से रूबरू कराता पेनोरमा देसी-विदेशी पर्यटकों के लिए ही नहीं, बल्कि शहरवासियों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गया है। प्रतिदिन सैकड़ों लोग भ्रमण के लिए आ रहे हैं। पेनोरमा की कुछ तस्वीरें देखिएं...

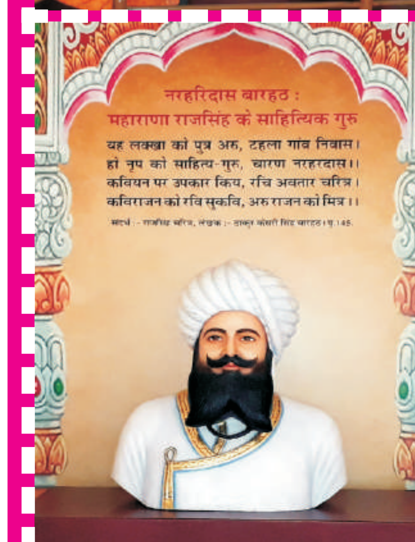

जयवर्द्धन

कार्यालय पता : C/O **शक्ति स्पोर्ट्स,** शास्त्री मार्केट कांकरोली,
जिला-राजसमंद, 9414239648, 96729 94705
Email : jaivardhanpatrika@gmail.com

To